thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2014-16

ओ३म्

कृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-१७, अंकः-६; दिसम्बर, सन्-२०१४, सं०-२०७१ वि०, दयानंदाब्द १९१, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११५; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर

महात्मा गाँधी स्वामी श्रद्धानन्द के चरणों में सर झुकाना अपना फर्ज़ मानते थे

छोटे भाई ने बड़े भाई का अनुगमन किया

सन् १९३१ में महात्मा गांधी ने अफ्रीका में भारतीयों के अधिकारों की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह आरम्भ किया। आन्दोलन के इस नये रूप से जहाँ अफ्रीका वासी भारतीयों में आत्मविश्वास और नव चैतन्य का संचार हुआ वहीं इस देश के राजनैतिक नेताओं की भी पराधीनता की बेड़ियाँ काट कर फेंकने के लिए एक नई दिशा सूझी और स्वभावतः ही शिक्षित वर्ग में अफ्रीकावासी अपने भाइयों के लिये सहानुभूति अनुभव हुई। भारत में श्री गोपाल कृष्ण गोखले ने जिन्हें महात्मा गाँधी एक रूप में अपना राजनीतिक गुरु मानते थे, इस आन्दोलन की सफलता के लिए भरसक प्रयत्न किया और स्थान स्थान धन संग्रह करके अफ्रीका भेजा। पर इस एकदम नये और समुद्रपार के आन्दोलन के लिए श्री गोखले को आशानुकूल धन की प्राप्ति नहीं हो रही थी। एक दिन वह इसी चिन्ता में लीन निराश बैठे हुए थे कि अकस्मात हरिद्वार से उन्हें नकदी २५०० रुपये की राशि उपरिलिखित रूप से मिली जिसे पाते ही वह प्रसन्नता से उछल पड़े। इस प्रसन्नता का कारण राशि मात्रा इतनी नहीं थी जितनी की दान की सात्विकता। गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी के ब्रह्मचारियों ने अपने भोजन में कमी करके और कठोर शीत में दुधिया-बन्द पर कड़ी मशक्कत करके एक-एक पैसा जमा किया था और इस प्रकार उपर्युक्त राशि श्री गोखले के पास धर्म युद्ध की सहायतार्थ भेजी थी।

जब अफ्रीका में महात्मा गांधी को विद्यार्थियों के इस निस्वार्थ त्याग का समाचार मिला तो वह इससे इतने प्रभावित हुये कि २१ अक्टूबर १९१४ को इन्होंने फिनिक्स नैटाल से महात्मा मुंशीराम को (जो बाद में स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से विख्यात हुए) निम्न आशय का पत्र अंग्रेजी में लिखा-

प्रिय महात्मा जी, श्री एण्ड्रूज ने मुझे आपके नाम और काम का परिचय दिया है। श्री एण्ड्रूज ने मुझे यह भी बताया है कि आप, गुरुदेव (श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर) और श्री रुद्र से किस प्रकार प्रभावित हुए हैं। आपके शिष्यों ने सत्याग्रहियों के लिये जो काम किया है उसका वर्णन भी उन्होंने मुझसे किया है। अतः मैं तीन संस्थाओं के संचालकों, व भारत के तीन सपूतों के प्रति अपना आदर व्यक्त करना चाहता हूँ। आपका-मो.क.गांधी।

महात्मा गांधी स्वामी श्रद्धानन्द और गुरुकुल से इतने प्रभावित थे कि १९१५ में जब फिनिक्स सत्याग्राहाश्रम के विद्यार्थी भारत आए तो गांधी जी ने उन्हें कई मास तक गुरुकुल में ही रखना उचित समझा और स्वयं भारत पहुंचते ही पूना से स्वामी जी को पत्र लिखा-

"आपके चरणों में सिर झुकाने को मैं अपना फर्ज समझता हूँ।"

आपका सेवक- मो.क.

और अपने आने की सूचना दिये बिना ही हरिद्वार चल पड़े। उन दिनों गुरुकुल गंगा के पार चण्डी पर्वत की उपत्यका में हरिद्वार से लगभग ४ मील दूर काँगड़ी ग्राम के समीप था। हरिद्वार से गुरुकुल तक सवारी का साधन भी कोई नहीं था। जो यात्री बरसात में वहां जाते थे, उन्हें बाँसों और पीपों की बनी छोटी सी तमेड़ पर ही अपनी जान हथेली पर लेकर गंगा की विशाल और भयंकर धारा को पार करना पड़ता था।

गांधी जी किसी तरह गुरुकुल पहुंचे। वहां न कोई उन्हें पहचानता था, और न ही उनके आने की कोई सूचना थी। तब तक वह इतने विख्यात भी नहीं हुये थे। जब गांधी जी ने गुरुकुल भूमि में सर्वप्रथम मिलने वाले व्यक्ति से पूछा- 'महात्मा (मुंशीराम) जी हैं?' तो उस व्यक्ति ने अत्यंत अन्यमनस्क भाव से 'होगा कोई' की उपेक्षा के साथ महात्मा मुंशीराम की कुटिया की ओर इशारा कर दिया। गांधी जी धीरे पदविन्यास पुण्यसलिता जान्हवी के तट पर खटुए की छाया में अतिष्ठित कुटिया में पहुंचे और जाते ही महात्मा मुंशीराम के चरण पकड़ लिये।

महात्मा मुंशीराम स्तब्ध होकर देखते रहे कि काठियावाड़ी पगड़ी बांधे और खद्दर का अत्यंत सादा सा कुर्ता पहने, पतला, लम्बा ग्रामीण सा दिखने वाला यह अजनबी व्यक्ति कौन है?

महात्मा मुंशीराम को इस आश्चर्य मुद्रा में क्षणभर भी न बीता होगा कि गांधी जी स्वयमेव बोल पड़े-'क्या अपने मुझे

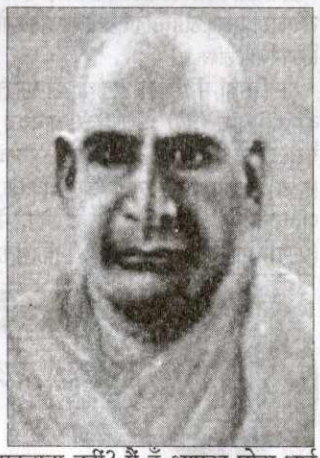

पहचाना नहीं? मैं हूँ आपका छोटा भाई मोहनदास कर्मचन्द गांधी।' और तब महात्मा मुंशीराम ने गांधी जी को गले लगा लिया। यह था दोनों महापुरुषों का प्रथम साक्षात्कार।

पीछे जब गुरुकुल वासियों की ओर से अभिनन्दन पत्र समर्पित किया गया तो उसका उत्तर देते हुये भी गांधी जी ने कहा था-'मैं हरिद्वार महात्मा(मुंशीराम) जी के दर्शन के लिये आया हूँ। मैं इनके प्रेम के लिये कृतज्ञ हूँ। मिस्टर एण्ड्रूज ने मुझे भारत में अवश्य मिलने योग्य जिन तीन महापुरुषों का नाम बताया था उनमें से महात्मा जी मुझे अपना कह कर पुकारते हैं।'

गुरुकुल कांगड़ी के चौदहवें वार्षिक उत्सव पर गांधी जी पुनः गुरुकुल पधारे। उस अवसर पर अपने भाषण में उन्होंने कहा था- इस समय मैं महात्मा जी का बन्दा बनकर आया हूँ। महात्मा जी मेरे बड़े भाई हैं। जब मैं विदेश में था तब मेरे लड़के यहाँ रहते थे। महात्मा जी उनके पिता और ब्रह्मचारी उनके भाई थे। मैंने १४ वर्षों से देखा है इनमें स्वार्थः त्याग और भारत के हित का भाव है। अतएव मैं इनका सत्संग करना चाहता हूँ।

गांधी जी स्वामी श्रद्धानन्द जी का कितना मान करते थे और किस प्रकार उन्हें अपना मार्गदर्शक मानते थे, यह उनके एक अन्य पत्र से विदित होता है। एक पत्र में उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी को लिखा-

आपका पत्र मुझे बल देता है....'मेरे कार्य में आर्थिक त्रुटियाँ आयेंगी तब आपका स्मरण अवश्य करूँगा। आश्रम वासी सबसे अधिक आपके आने की राह देखते हैं। अवधि बीतने पर हम सब अधीर हो जाएंगे।' एक दूसरे पत्र में गांधी जी ने लिखा था कि मेरी यह आजिजी है कि थोड़े दिनों के लिए अहमदाबाद के इस आश्रम को पवित्र करो। आश्रमवासी आपका दर्शन कर कृतार्थ होंगे।

गांधी जी स्वामी श्रद्धानन्द जी का केवल आदर ही नहीं करते थे, किन्तु उनके जीवत जाग्रत विश्वास के कायल भी थे। जब सन् १९२० में अमृतसर में अखिल भारतीय कांग्रेस महासभा के स्वागताध्यक्ष पद से भाषण देते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस जैसी राजनीतिक संस्था के मंच से अस्पृश्यता निवारण पर बल दिया तब कुछ वाकशूर राजनीतिक खिलाड़ियों ने इसे दकियानूसी कहा। किन्तु गांधी जी ज्यों ज्यों इस प्रश्न के महत्व को हृदयंगम करते गये त्यों त्यों स्वामी जी के विचारों के समर्थक होते गये। और आगे जाकर स्वामी जी की एतद्विषयक जीवित धारणाओं से वह इतने अधिक प्रभावित हुए कि हरिजनोद्धार केवल उनके जीवन का ही नहीं, प्रत्युक कांग्रेस के कार्य-क्रम का आवश्यक और अविच्छिन्न अंग बन गया। अपने 'बड़े भाई' और 'मार्गदर्शक' की मृत्यु पर गांधी जी ने लिखा-

'ईश्वर उनके लिए कर्मवीर हुतात्मा (शहीद) की मृत्यु ही चाहते थे और इसलिए यद्यपि वह उस समय रोग शय्या पर थे उनके शरीर का अन्त एक घातक के हाथ से हुआ। मृत्यु किसी भी समय सुखदायक होती है। किन्तु वह उस वीर के लिए तो दुगुनी सुखदायक है जो अपने ध्येय के सत्य के लिए मरता है। उनसे तथा उनके अनुयायियों से मुझे ईर्ष्या है। जिस कुल में उनका जन्म हुआ और जिस देश के साथ उनका सम्बन्ध है वे उनकी इस प्रकार की शानदार मृत्यु के लिए बधाई के पात्र हैं। वह वीर की तरह जिये और वीर की ही तरह मिटे।'

जानकार लोगों का कहना है कि उपर्युक्त सन्दर्भ में जिस वीर मति और उसके प्रति ईर्ष्या का उल्लेख है, अपने जीवन के अन्तिम दिनों में गांधी जी के मन में उनकी लालसा तीव्रतम रूप में जागृत हो उठी थी और वह प्रायः स्वामी श्रद्धानन्द और उनकी मृत्यु को याद किया करते थे।

शेष पृष्ठ 3 पर.....

विनय पीयूष

तू सकल ऐश्वर्य मेरा !

महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ।।

(साम. पू. : 3/6/9)

वज्र भी तू, जलद भी तू
परमधन मेरे !
मैं तुझे छोड़ूँ तो क्यों
किस मोल पर ?
शत, सहस्र कि और
ऊँचे बोल पर ?
तू सकल ऐश्वर्य मेरा
प्राण प्रण मेरे !

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

कहीं से हम आये थे नहीं!

मानव सभ्यता ने पहली बार हिमालय की उपत्यकाओं में अपनी आँखें खोलीं- इस स्थान का प्राचीन नाम 'त्रिविष्टयू' था; जिसे बाद में 'तिब्बत' या 'तिब्बत का पठार' कहा गया। आदि मानव को जंगली बर्बर या बन्दर समझना पाश्चात्य इतिहासकारों की कल्पना मात्र है। आदि पुरुषों में चार श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा वेद अर्थात् ज्ञान की किरणें प्रस्फुटित हुईं- इन श्रेष्ठ मानव आत्माओं का नाम था- अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा। जिनके हृदयों में ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद का ज्ञान प्रकाशित हुआ। मानव सभ्यता के इन आदि पुरुषों को 'आर्य' कहा गया जिसका अर्थ है- 'ईश्वर पुत्र'। 'आर्य' शब्द श्रेष्ठता का वाचक है। द्रविड़ का अर्थ- 'अनार्य' नहीं है वरन् दक्षिणी भारत के रहने वालों को 'द्रविड़' कहते हैं। द्रविड़ भी आर्य ही हैं। 'आर्य' शब्द गुण वाचक है किसी जाति या वर्ग विशेष से इस शब्द को जोड़ना अन्याय, अनर्थ और अज्ञान है।

आर्यों का उद्देश्य ही था- संसार में अच्छे वातावरण का निर्माण करना अपवित्रताओं का निराकरण करते रहना-

इन्द्रं वर्धन्तु अप्तुरः अपघ्नन्तोऽराव्णः
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' ध्येय लेकर यह आर्य जाति शनैः शनैः संसार के अन्यान्य प्राकृतिक भागों में फैलती गई। भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के ज्ञाता कवि श्री जयशंकर 'प्रसाद' ने 'भारतवर्ष' शीर्षक कविता में आदि मानव की उत्पत्ति और प्रादुर्भाव का मनोरम चित्र खींचा है-

हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार।
उषा ने हँस अभिनन्दन किया और पहनाया हीरक हार।।
जगे हम लगे जगाने विश्व, लोक में फिर फैला आलोक।
व्योम तम पुंज हुआ फिर नाश, अखिल संसृति हो उठी अशोक।।

आर्य हिमालय की उपत्यकाओं से उतरकर शनैः शनैः चारों तरफ फैल गये क्योंकि उस समय सम्पूर्ण संसृति प्रकृति निर्जन थी। वे जहाँ जहाँ गए धरती को बसाया, कृषिकार्यों के संचालन किया, कलाकौशल का विस्तार किया आश्रमों की स्थापना की तथा 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' अर्थात् सर्वजनहिताय पर आधारित कार्यक्रमों का संचालन किया। आर्ष ऋषियों द्वारा स्थापित आश्रमों के चिन्ह आज भी पुरातत्ववेत्ताओं को मिल रहे हैं। मोहन जोदड़ो हड़प्पा की खुदाई से मिले हुए भग्नावशेष- उस समय की सभ्यता की कथाएँ सुना रहे हैं। स्वामी विद्यानन्द सरस्वती 'वेदार्थ भूमिका' में लिखते हैं- 'आश्चर्य की बात है कि जहाँ भारत के स्कूल कालेजों में यह पढ़ाया जाता है कि आर्य लोग ईरान से आकर भारत में बस गये, वहाँ ईरान में यह पढ़ाया जाता है कि भारत से आकर आर्य लोग ईरान में बस गये-

"चन्द हज़ार साल पेश अज़ ज़माना माज़ीरा बजुर्गी अज़ निजाद आर्या अज़ कोहहाय कफ़ गुजिश्तः बर सर ज़मीने के इमरोज मस्कने मास्त क़दम निहादन्द। ब यूँ आबो हवाय ई सर ज़मीरा मुआफ़िक़ तब' अ खुद याफ्तन्द दरी जा मस्कने गुज़ीदन्द व आरां बनाम खेश ईरान खियादन्द।" -देखो जुग़राफिया पंज कितअ बनाम तदरीस दरसाल पंजुम इब्तदाई, सफा ७८, कालम १, मतब अ दरसनहि तेहरान सन् हिजरी १३०६, सीन अव्वल व चहारम, अज़ तर्फ़ विज़ारत मुआरिफ व शरशुदः।

अर्थात् 'चन्द हजार साल पहले आर्य लोग हिमालय पर्वत से उतर कर यहाँ आये और यहाँ का जलवायु अनुकूल पाकर ईरान में बस गये।'

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भारतभूमि महिमा का गायन करते हुए लिखा था-

प्रथम प्रभात उदय तव गगने,
प्रथम सामरव तव तपोवने।

इतना ही नहीं, डॉ.इकबाल मोहम्मद ने 'बागे दराँ' नामक पुस्तक में 'हिमालय के प्रति' प्रसिद्ध कविता में नगाधिराज हिमालय को सम्बोधित करते हुए लिखा है-

ऐ हिमालय ऐ फसीले, किश्वरे हिन्दोस्ताँ,
चूमता है तेरी पेशानी को झुककर आसमाँ,
ऐ हिमालय, दास्ताँ उस वक्त की कोई सुना-
मस्कने आवामे-इंसाँ जब बना दामन तेरा।

'ऐ नगाधिराज! कुछ उन दिनों की दास्तान तो सुनाओ, जब आदि पुरुष ने तुम्हारी गोदी में जन्म लिया था।'

ध्यान रखने की बात यह है कि विदेशी इतिहासकारों ने निजी स्वार्थों से प्रेरित होकर यह कहानी गढ़ी कि आर्य लोग आक्रमणकारी थे और उन्होंने यहाँ के मूल निवासियों को पराजित कर इस देश पर अपना अधिकार कर लिया। स्वयं विदेशी आक्रान्ता होने के कारण भारत में स्वराज्य आन्दोलन को दबाने और कुचलने के क्षुद्र स्वार्थ से प्रेरित होकर विदेशी इतिहासकारों ने ऐसी कल्पना की उड़ाने भरीं; जिसका कोई आधार नहीं मिलता और आधुनिक काल में साम्यवादी (मार्क्सवादी) शिक्षाविदों के तो पौ बारह हो गये। शिक्षा मंत्रालय उनके लिए उपयुक्त चारागाह सिद्ध हुआ; जिसमें अपने ढँग से कुलाँचें भरीं। नवजागृति के परिणाम स्वरूप भारत देश के सम्बन्ध में विचार रखने का मौलिक अधिकार इस देश के वासियों का है; इस देश के चिन्तकों का है; ऋषियों मुनियों कवियों और कलाकारों का है; और प्रायः सभी पुकार पुकार कर कह रहे हैं- भारत आर्यों का आदि देश है।

श्री मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में-

यह देश भारत वर्ष है,
इसके निवासी आर्य हैं।
विद्या कला कौशल्य के,
सबसे प्र... ... हैं।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१५३

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में सप्तम समुल्लास का अंश

जो परमेश्वर कर्म कराता होता तो कोई जीव पाप नहीं करता, क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धार्मिक होने से किसी जीव को पाप करने में प्रेरणा नहीं करता। इसलिए जीव अपने काम करने में स्वतन्त्र है। जैसे जीवन अपने कामों के करने में स्वतन्त्र है वैसे ही परमेश्वर भी अपने कर्मों के करने में स्वतन्त्र है।

(प्रश्न) जीव और ईश्वर का स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव कैसा है?

(उत्तर) दोनों चेतनस्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं। और जीव के सन्तानोत्पत्ति उनका पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे बुरे कर्म हैं। ईश्वर के नित्यज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं। और जीवन के-

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिंगमिति॥ न्याय सू.।

प्राणापाननिमेषोन्मेषजीवनमनोगतीन्द्रियान्तरविकाराः सुखदुःखे इच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्चातमनो लिंगानि॥ वैशेषिक सू.।

दोनों सूत्रों में (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दुःखादि की अनिच्छा, वैर (प्रयत्न) पुरुषार्थ, बल (सुख) आनन्द (दुःख) विलाप, अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक, पहिचाना ये तुल्य हैं परन्तु वैशेषिक में (प्राण) प्राणवायु को बाहर निकालना

ईश्वर तथा जीव के गुण कर्म स्वभाव

(अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना (निमेष) आंख को मींचना (उन्मेष) आंख को खोलना (जीवन) प्राण का धारण करना (मन) निश्चय स्मरण और अहंकार करना (गति) चलना (इन्द्रिय)

सब इन्द्रियों को चलाना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष शोकादियुक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह स्थूल नहीं है।

जब तक आत्मा देह में होता है तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़ चला जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हों और न होने से न हों वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है, वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान गुण द्वारा होता है।

(प्रश्न) परमेश्वर त्रिकालदर्शी है इससे भविष्यत् की बातें जानता है। वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा। इससे जीव स्वतन्त्र नहीं और जीव को ईश्वर दण्ड भी नहीं दे सकता क्योंकि जैसा ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया है वैसा ही जीव करता है।

(उत्तर) ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता का काम है। क्योंकि जो होकर न रहे वह भूतकाल और न होके होवे वह भविष्यत्काल कहाता है। क्या ईश्वर को कोई ज्ञान होके नहीं रहता तथा न होके होता है? इसलिए परमेश्वर का ज्ञान सदा एकरस, अखण्डित वर्तमान रहता है। भूत, भविष्यत् जीवों के लिए है। हां जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर में है, स्वतः नहीं। जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान के ज्ञान और फल देने में ईश्वर स्वतन्त्र और जीव किंचित् वर्तमान और कर्म करने में स्वतंत्र है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म का ज्ञान है वैसा ही दण्ड देने का भी ज्ञान अनादि है। दोनों ज्ञान उसके सत्य हैं। क्या कर्मज्ञान सच्चा और दण्डज्ञान मिथ्या कभी हो सकता है? इसीलिए इसमें कोई भी दोष नहीं आता। *(क्रमशः)*

वेदांजलि

उसके मित्र कभी दुःख नही पाते

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव स महेमा मनीषया।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव।।

-साम. 66

शब्दार्थ-

(वयम्) हम उपासक लोग **(इमं स्तोमम्)** इस स्तोत्र के **(अर्हते)** योग्य **(जातवेदसे)** वेद-प्रकाशक परमात्मा को **(मनीषया)** सूक्ष्म-बुद्धि से **(रथमिव)** रथ के समान **(सम्महेमा)** बढ़ावें। **(अस्य)** इस परमात्मा की **(संसदि)** ध्यानशाला में **(नः)** हमारी **(प्रमतिः)** पवित्र बुद्धि **(भद्रा हि)** शुद्ध होती ही है। **(अग्ने)** हे प्रकाशस्वरूप! **(तव)** आपकी **(सख्ये)** अनुकूलता में **(मा)** न **(रिषामा)** दुःखी होवें।

व्याख्या-

इस मंत्र में चार बातें कही गई हैं- (१) हमारी सच्ची स्तुति का पात्र वह प्रभु ही है। (२) अपनी सूक्ष्मबुद्धि से न्याय-नियमों को समझकर इस प्रकार विस्तृत करो जैसे रथ-चालक अभ्यासार्थ घोड़े से चलाए रथ को फिर अपनी बुद्धि से भिन्न-भिन्न मार्गों में चला लेता है। (३) प्रभु की उपासना से हमारी बुद्धि कल्याणी बनती है। (४) जो वास्तव में प्रभु के मित्र बन जाते हैं, वे संसार में कभी दुःख नहीं पाते।

अब क्रमशः एक-एक बात पर विचार कीजिये-

तुम्हारी स्तुतियों का योग्यपात्र वह प्रभु ही है। रे मनुष्य! तू किसकी प्रशंसा में कविता के पंखों पर उड़कर पृथिवी और आकाश के कुलाबे मिलाता है? किसके यशोगान में लच्छेदार वक्तृताओं और निबन्धमालाओं को प्रस्तुत करता है? उसी मनुष्य को प्रसन्न करने के लिए जो तनिक-से व्यतिक्रम पर तेरे सब किये-कराए पर पानी फेर देता है? थोड़ी थोड़ी-सी बात पर जिसके हृदय में प्रतिहिंसा की ज्वाला धधक उठती है? तू स्मरण रख-यह सौदा बहुत मँहगा है! तू लाख यत्न करके भी इन्हें प्रसन्न न कर पायेगा। ठीक ही कहा है किसी शायर ने-

मकामे-शुक्र है सूफी, खुदा के हाथ है रोजी।
अगर ये हक भी इन्साँ को दिया होता तो क्या होता?

यदि तू वस्तुतः अपनी स्तुति को सार्थक बनाना चाहता है तो उस अनन्त महिमा मण्डित प्रभु के गुण गा। तल्लीन होकर यदि तू उसकी स्तुति में लग जावे तो उसको प्रसन्न करना इन सांसारिक प्रभुओं से कहीं सरल है।

मन्त्र की दूसरी बात है- संसार में प्रभु की न्याय-व्यवस्था को समझो और समझने के पश्चात् उसका विस्तार करो। बहुत से लोग इन न्याय-नियमों को न समझने के कारण ही उलटे मार्ग पर चल पड़ते हैं। नास्तिकों का मत तो आधारित ही इस बात पर है, जैसे- अधिकांश यह प्रश्न किया करते हैं कि 'प्रभु हमारा शुभचिन्तक पिता है तो जब हम पाप की ओर प्रवृत्त होते हैं, तभी क्यों नहीं रोकता? जब हम पाप कर बैठते हैं तो फिर गिन-गिनकर कसर निकालता है। क्या वह हमें दुःखी देखने में ही प्रसन्न है? यदि वह पाप करने के समय ही सावधान कर देता तो हमें यह दुष्परिणाम क्यों भोगना पड़ता?' इस प्रश्न का विवेचन स्व.पं.रामचन्द्र देहलवी बहुत रोचक ढंग से किया करते थे। उसी के आधार पर लिखना अधिक समीचीन होगा। वे कहा करते थे-'स्कूल के एक अध्यापक महोदय हैं। जिस स्कूल में पढ़ाते हैं, उसी में बच्चों के साथ उनका अपना लड़का भी पढ़ता है। मास्टर जी बच्चों को बड़े परिश्रम से पढ़ाते हैं और अपने बच्चे को तो स्कूल के अतिरिक्त घर पर भी समय देकर एक-एक बात को मस्तिष्क में बिठा देते हैं। अब वर्षभर की तैयारी के बाद परीक्षा का समय आया और परीक्षक महोदय ने उसी पुस्तक में से प्रश्न दिये, जो क्लास में भली प्रकार पढ़ाई गई थी। परीक्षक महोदय स्वयं तो एक कुर्सी पर बैठ गए और मास्टर साहब को निरीक्षण के लिए कहा, ताकि कोई विद्यार्थी किसी से पूछ न सके और नकल भी न कर सके।

मास्टर जी निरीक्षण करते हुए घूम रहे हैं और कभी-कभी लिखते हुए बच्चों की कापी पर भी दृष्टिपात कर लेते हैं। इसी क्रम में घूमते हुए अपने पुत्र के पास आ खड़े हुए। कापी पर दृष्टि गई तो देखा कि लड़का प्रश्न का उत्तर अशुद्ध लिख रहा है। पिताजी इस अशुद्धि को देख भी रहे हैं, वे स्वयं इस प्रश्न का ठीक-ठीक उत्तर जानते भी हैं, पुत्र का हित उसके उत्तीर्ण होने में है, किन्तु फिर भी मर्यादा में जकड़े हुए उसे बताते नहीं। इस समय उनके बताने को कोई उचित नहीं समझेगा। क्यों? क्योंकि यह परीक्षा का समय है।'

मन्त्र की तीसरी बात है-उपास्य के गुण उपासक में आने चाहियें। यदि नहीं आते तो कहीं-न-कहीं त्रुटि अवश्य है। लगता है-वह भक्ति नहीं, ढोंग है।

उपासना का शब्दार्थ है-समीप बैठना। लोक में आप देखते हैं कि पानी के पास बैठने वाला शीतलता अनुभव करता है और अग्नि के समीप बैठनेवाला उष्णता का। यही बात प्रभु की उपासना के लिए भी है। जो भक्त प्रभु को न्यायकारी

(शेष पृष्ठ ३ पर..)

thearyasamaj.org

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-७६

स साकारस्त्यक्तस्तव कथनमात्रात्परिचितो
निराकारश्चित्ते त्ववतरति यत्नादपि न मे।
विमूढोऽहं देव! द्विपथगतिको नैव पथिकः
विवादं त्यक्त्वेमं श्रुतिसुजनसेवारतिरहम्।।

हे देव !
मैं साकार देवता की पूजा से
परिचित था !
तुम्हारे कथन मात्र से
मुर्तिपूजा छोड़ बैठा !
परन्तु प्रयास करे भी मन में
निराकार देवता उतरता नहीं !!
मैं भ्रान्ति में फँसा हूँ और
दोराहे पर खड़ा हूँ।
परन्तु दो राहों पर पाँव रखने वाला
पथिक क्या पथिक होगा?
अतः साकार और निराकार का
विवाद त्याग कर मैंने
वेदों और सज्जनों की
सेवा में मन लगा लिया है !!

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा : दीपावली के दिन महर्षि के प्राण त्यागने की घटना को निर्वाण अथवा बलिदान- किस श्रेणी में रखा जाय? कृपया जिज्ञासा का समाधान करने की कृपा करें। *-प्रत्यूषरत्न पाण्डेय, मंत्री, आर्य उपप्रतिनिधि सभा, लखनऊ*

समाधान : दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द की मृत्यु को निर्वाण कहना ही उचित है। इसे बदल कर बलिदान करने का विचार सर्वथा असंगत है। कारण निम्नांकित हैं-

(१) (अ) 'बलिदान' शब्द का कोशगत अर्थ- इष्ट देवता को नैवेद्य अर्पित करना है। जिसका महर्षि की मृत्यु से दूर दूर तक कोई संबन्ध नहीं है। (ब) 'बलिदान' शब्द का आज जो प्रचलित अर्थ है- उसके अनुसार किसी उच्च उद्देश्य हेतु कार्य करने वाले व्यक्ति का शस्त्र प्रहार अथवा फाँसी इत्यादि माध्यमों से प्राणान्त होने की दशा को 'बलिदान' कहा जाता है। वीर हकीकत राय, गुरु गोविन्द सिंह के पुत्रों, पं.लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, म.राजपाल इत्यादि की मृत्यु इसी श्रेणी में आती है; इसे हम 'बलिदान' कहते हैं। उनकी मृत्युतिथि भी सर्व सम्मति से बलिदान दिवस के रूप में प्रसिद्ध है। महर्षि दयानन्द की मृत्यु इस श्रेणी में नहीं आती है। उनकी मृत्यु शस्त्र प्रहार अथवा फाँसी इत्यादि माध्यमों से नहीं हुई थी और न उनका किसी शासन सत्ता या व्यक्ति विशेष से कोई प्रत्यक्ष संघर्ष या विरोध था।

(२) कुछ विद्वानों की दृष्टि में 'निर्वाण' शब्द बौद्ध परम्परा का शब्द है अर्थात् महात्मा बुद्ध की मृत्यु को 'निर्वाण' कहा जाता है अतः महर्षि दयानन्द की मृत्यु के लिए इसका प्रयोग उचित नहीं है, यह दलील अत्यन्त हास्यास्पद है। महात्मा बुद्ध ने चार 'आर्य सत्यों' का प्रतिपादन किया है तो क्या हम आर्य कहलाना बन्द कर दें। पं.बुद्धदेव विद्यालंकार के नाम में 'बुद्ध' शब्द है तो हम बुद्धदेव विद्यालंकार को दूसरा कोई नाम 'ज्ञानदेव विद्यालंका' कहेंगे? फिर बौद्धों के पास अपनी कोई शब्दावली है ही नहीं। उनको सारे शब्द संस्कृत से ही प्राप्त हुए हैं। यह विश्वविदित है कि पालि प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की जननी संस्कृत है।

(३) 'निर्वाण' शब्द का कोशगत अर्थ है- आत्मा का परमात्मा से मिलन (संस्कृत हिन्दी शब्द कोश- वामनशिवराम आप्टे) या शाश्वत आनन्द। (निर्वाण का एक अन्य अर्थ फूँक मारकर दीपक बुझाना भी है- किन्तु यह अर्थ यहाँ प्रकरण विरुद्ध है) महर्षि की मृत्यु को निर्वाण इसीलिए कहा गया- क्योंकि यह मृत्यु सामान्य मृत्यु न होकर आत्मा का परमात्मा से मिलन था। सुविख्यात साहित्यकार विष्णु प्रभाकर महर्षि की मृत्यु के दृश्य का इस प्रकार वर्णन करते हैं-

"डॉ.लक्ष्मणदास के आग्रह पर सिविल सर्जन को बुलाया गया। वे स्वामी जी के अपूर्व आत्मबल से बड़े प्रभावित हुए पर विशेष कुछ कर न सके। स्वयं स्वामी जी ने कहा, "मेरा अन्त समय आ गया है, अतः उपचार छोड़ दो।" उस दिन दीवाली थी, तमस पर प्रकाश की विजय का पर्व। जीवन भर वे भी तमस के विरुद्ध युद्ध करते रहे थे। उन्होंने नेत्र खोले। नयनों में नीर भरे अनेक भक्त वहाँ खड़े थे। स्वामी जी ने उन्हें पीछे खड़े हो जाने के लिए कहा, बोले, "सब द्वार खोल दो। प्रकाश आने दो।" द्वार खुलते ही प्रकाश भर उठा। उन्होंने पूछा, "आज कौन-सा दिन, कौन-सी तिथि और कौन-सा पक्ष है?" एक भक्त ने उत्तर दिया, "कृष्ण पक्ष का अन्त और शुक्ल पक्ष का आरम्भ है। तिथि अमा है और वार मंगल।" स्वामी जी का मन खिल उठा। उन्होंने चारों ओर देखा। फिर मंत्रोच्चार करने लगेः *(शेष पृष्ठ ४ पर....)*

(पृष्ठ 1 का शेष.....)

महात्मा गांधी.....

जब कलकत्ते में मुस्लिम लीग की 'सीधी कार्यवाही' के परिणाम स्वरूप खून की होली खेली गई और उसकी बिहार में हुई प्रतिक्रिया के दूषित चक्र की नोआखली में पुनरावृत्ति हुई और वहाँ के अल्पसंख्यक 'त्राहि-त्राहि' पुकार उठे तब गांधी जी की एकाकी और अराधीत अवस्था में वहां गये और बुढ़ापे में जवानी को लजाते हुए पैदल जाकर लोगों को सांत्वना, शांति और निर्भयता का संदेश देने लगे, तब उस साम्प्रदायिक विद्वेष से लबालब भरे वातावरण में यह नितान्त सम्भव था कि कोई मनचला मतान्ध उस वृद्ध शांतिदूत को भी अपने खंजर का..... (शांतं पापम्)।

इसी मानसिक स्थिति में नोआखाली में गांव गांव पैदल भ्रमण करते हुये एक दिन शाम को पड़ाव पर पहुंच कर गांधी जी अपने प्राइवेट सेक्रेटरी श्री निर्मल बोस से पूछने लगे-'निर्मल, तूने स्वामी श्रद्धानन्द का नाम सुना है?' 'कौन स्वामी श्रद्धानंद?' श्री निर्मल बोस ने पूछा। 'जिसे एक भ्रान्त मुसलमान ने बुढ़ापे में रोग शय्या पर पड़ी हुई दशा में गोली का निशाना बनाया था।' गांधी जी ने उत्तर दिया। निर्मल बोस अभी इतना ही कह पाये थे कि गांधी जी बीच में बोल पड़े- 'मैं सोचता था कि कहीं उनकी तरह...' और इतना कहकर गांधी जी ने स्वयं ही अपनी बात काट दी और कहने लगे- 'नहीं कुछ नहीं, कोई खास बात नहीं। तुम अपना काम करो। देखो मेरे पैर धोने का पानी गर्म हो गया या नहीं?'

बात आई गई, हो गई। किन्तु इस छोटी सी घटना से जीवन के अन्तिम दिनों में गांधी जी मनःस्थिति की कल्पना की जा सकती है। अपने बड़े भाई की मृत्यु पर जो उद्गार उन्होंने प्रकट किये थे- 'ईश्वर से उनकी तरह ही शहीद की मृत्यु चाहता हूँ। उनसे मुझ एक प्रकार की ईर्ष्या होती है। वे वीर की तरह जीए और वीर की तरह मरे' इत्यादि शब्दों से व्यक्त होने वाली आकांक्षा के स्वरूप के प्रति कौन जाने कालक्रम से ही ये शब्द उन पर भी घटित हो गये।

जिस प्रकार भ्रांत व्यक्ति की गोलियों का निशाना बन कर 'बड़े भाई' ने शहादत पाई उसी प्रकार छोटे भाई ने भी भ्रांत व्यक्ति की गोलियों का निशाना बनकर बड़े भाई का पदानुगमन किया। दिल्ली महानगरी और यमुना की धारा दोनों भाइयों की समान शहादत की साक्षी है।

(इस समीक्षा के लेखक का पता न चला - सम्पादक)

(आर्य समाज कोलकाता द्वारा प्रकाशित 'स्वामी श्रद्धानंद बलिदान हीरक जयन्ती स्मारिका' से साभार)

(पृष्ठ 2 का शेष.....)

वेदांजलि.....

मानकर उसके न्यायपूर्ण कामों को हृदयंगम करता है, वह दूसरों के साथ न्याययुक्त व्यवहार करे। प्रभु सबका भला चाहते हैं। यदि उपासक सच्चा है तो वह भी सबका भला चाहेगा। संसार की रक्षा के लिए दुष्टों और दुराचारियों की शक्ति क्षीण करने में भी एक भक्त को सदा कटिबद्ध रहना चाहिए।

जब उपासक में उपासना के द्वारा ये दिव्य गुण आने लग जावें तो बुद्धि के कल्याणमय होने में क्या सन्देह रह गया? विचार बीज है, तो कार्य उसका अंकुर है। जैसा बीज होगा वैसा ही पौधा होगा और उसपर फल भी वैसा ही लगेगा। इस स्थिति में साधक पापों को परे धकेल कर भद्रता का भाजन बन जाता है।

मन्त्र की चौथी बात है- जो भक्त प्रभु का मित्र बन जाता है, वह संसार में कभी दुःखी नहीं होता। कर्मफल के आधार पर सांसारिक कष्ट आते भी हैं, तो उन्हें वह सहर्ष स्वीकार कर उनका स्वागत करता है। किन्तु प्रभु का सखा बनने के लिए गुणों की समानता अपरिहार्य है। मित्रता के भावों के उद्दीप्त होते ही आप मित्र से मिलने के लिए व्याकुल हो उठेंगे। जब मिलन की भावना तीव्र होगी तो संसार के विषय-सुखों का आकर्षण फीका पड़ जाएगा। संसार के सब रस नीरस लगेंगे। रहीम के शब्दों में हालत यह होगी-

प्रीतम-छवि नयनन बसी, पर-छवि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, आप पथिक फिरि जाय।।

(श्रुति सौरभ से साभार)

वाचनालय से

हर पत्र-पत्रिका के पाठक उसके सम्पादक को अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराते ही रहते हैं। सम्पादक चयनित प्रतिक्रियाओं को प्रकाशित भी करते रहते हैं। कुछ प्रतिक्रियाओं में ध्यानाकर्षण की प्रबल शक्ति भी होती ही है। इसमें कुछ खास बात नहीं। लेकिन, पाक्षिक **'परोपकारी'** (अजमेर) में प्रकाशित एक प्रतिक्रिया खास भी है और प्रवृत्ति में अद्भुत भी। प्रतिक्रिया के प्रेषक हैं, डॉ.वी. पी.वैदिक (हाफिज सईद का साक्षात्कार लेकर चर्चा में आए वेद प्रताप वैदिक) और प्रेषण का माध्यम बना है Sony Xperia Smartphone से भेजा गया e-mail. सम्पादक 'परोपकारी' को भेजे गये मेल की भाषा है : 'आपसे बढ़कर मूर्ख आर्य समाज में आज तक कोई पैदा नहीं हुआ। आप जैसे गधे को सम्पादक किसने बनाया है? आप हम लोगों के कलंक हैं। आप चुल्लू भर पानी में डूब मरिये। यह सब लिखते हुए आपको जरा भी शर्म नहीं आयी!' ज्ञातव्य है कि 'परोपकारी' के सम्पादक ने डॉ.वेद प्रताप वैदिक के हाफिज सईद प्रकरण पर अगस्त द्वितीय-१४ अंक में आलोचनात्मक टिप्पणी छापी थी। स्पष्ट है वह डॉ. वैदिक को पसन्द नहीं आयी और उन्होंने मोबाइल के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर दी। उन्हें क्या मालूम रहा होगा कि सम्पादक महोदय मोबाइल पर मिले मेल पर भी अपनी पत्रकारिता दिखा देंगे!

'बोको हराम ने कराई अगवा लड़कियों की शादी' शीर्षक समाचार देते हुए **'दैनिक जागरण'** लिखता है कि नाइजीरिया में बोको हराम की चुनौती कम होने का कोई संकेत नहीं मिल रहा है। जहाँ एक ओर सरकार आतंकियों से समझौता होने और अगवा की गई स्कूली लड़कियों की रिहाई का दावा कर रही है, वहीं दूसरी ओर आतंकियों की ओर से ऐसी संभावना से पूरी तरह इन्कार किया गया है।

बोको हराम की ओर से कहा गया है कि अपहृत लड़कियों का धर्म परिवर्तन कराकर उनकी शादी आतंकी लड़ाकों से कर दी गई है। संगठन के प्रमुख अबुबकर शेकाऊ ने नये वीडियो में इस बात का खुलासा किया। शुक्रवार को सामने आया वीडियो उन सभी दावों के विपरीत है, जिनमें कहा गया था कि आतंकियों से बात हो रही है और अगवा लड़कियों को जल्द रिहा करा लिया जायेगा। बोको हराम ने अप्रैल में बोर्नो राज्य के चिबोक शहर से २०० से ज्यादा लड़कियों को अगवा कर लिया था। वीडियों में शेकाऊ ने नाइजीरियाई सरकार के साथ संघर्ष विराम की किसी संभावना से इन्कार किया है।

'टंकारा समाचार' मासिक (नई दिल्ली) ने अर्जुनदेव चड्ढा का तर्क संगत लेख प्रकाशित कर 'दीपावली पर्व का वैज्ञानिक स्वरूप' सामने रखा है। अर्जुनदेव चड्ढा लिखते हैं कि जब शारदीय फसल घर में आती थी, उस समय वर्षा की अवधि समाप्त हो जाती थी। वर्षा के चार महीनों में धरती आर्द्र रहती थी, जिससे घरों में सीलन भी आ जाता था। कूड़े-कचरे भी सड़कर दुर्गन्ध उत्पन्न करते थे। इस सबका परिणाम होता था, तमाम प्रकार के रोगाणुओं का जन्म। पूरा वातावरण संशोधन के योग्य हो जाता था। हमारे प्रचीन ऋषि-मुनि वातावरण के संशोधन के लिए यज्ञ करते थे। उसमें कीटाणु नाशक अनेक प्रकार की औषधियों का प्रयोग कर आहुति देते थे। उस आहुति से रोगों के कीटाणुओं का विनाश हो जाता था और वातावरण एकदम शुद्ध। परिमार्जित। पवित्र। इस प्रकार पर्यावरण रक्षा का महान पर्व दीपावली, किन्तु पता नहीं कब से और कहाँ से इस पर्व के साथ पटाखों और आतिशबाजियों का संबन्ध जुड़ गया। हम इस महान पर्यावरणीय पर्व को पटाखों और आतिशबाजियों से प्रदूषित करते हैं।

'स्वर्ग शारीरिक है अथवा आत्मिक?' इस प्रश्न का संक्षिप्त किन्तु सटीक उत्तद देता चमूपति एम.ए. का लेख **'नूतन निष्काम पत्रिका'** मासिक (मुम्बई) ने प्रकाशित किया है। चमूपति एम.ए.लिखते हैं कि 'स्वर्ग' का अर्थ है 'सुख की अवस्था'। यह सुख शरीर के साथ भी हो सकता है और शरीर के बिना भी; दोनों प्रकार का सुख जीवन में भी प्राप्त हो सकता है, तथा मृत्यु के पश्चात् भी। मोक्षावस्था का आरम्भ इसी शरीर में होता है; हाँ, आत्मिक आनन्द का साधन यह शरीर नहीं होता। यह भी नहीं कि आत्मिक आनन्द की प्राप्ति के लिये शरीर का अभाव आवश्यक हो। मृत्यु के पश्चात् जिन्हें अच्छा जन्म मिल गया, उन्हें भी एक प्रकार का 'स्वर्ग' मिल गया।....आर्य समाज तथा सनातन धर्म के मन्तव्यों मे अन्तर इतना ही है कि जहां सनातन धर्म स्वर्ग को इस जगत् से भिन्न एक अन्य भौतिक स्थान पर मानते हैं, आर्य समाजी इसी संसार के सुख को ही 'स्वर्ग' कहते हैं। यह अवस्था आवागमन की अवस्था में भी आ जाती है।

'आर्यमित्र' साप्ताहिक (लखनऊ) ने 'आर्य समाज और अन्तर्जातीय विवाह- वर्तमान परिप्रेक्ष्य' शीर्षक से अर्जुनदेव चड्ढा का प्रासंगिक लेख प्रकाशित किया है। अर्जुनदेव चड्ढा लिखते हैं कि जहाँ वर्ण है वहाँ जन्मना जाति नहीं। सत्यार्थ प्रकाश बल देता है कि विवाह गुण, कर्म, स्वभावानुसार होना चाहिए। आर्य समाजेतर समाजों में विवाह को लेकर अनेक कठिनाइयाँ हैं-जन्म कुण्डली, मंगला-मंगली, शिक्षा, रोजगार, खान पान, रहन सहन, पारिवारिक स्थितियाँ आदि। आज लड़कियों का अनुपात लड़कों से कम है, फिर भी लड़की वाले परेशान हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने उल्लेख किया है- चाहे लड़का-लड़की मरणपर्यन्त कुमार रहें परन्तु असदृश अर्थात परस्पर विरुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव वालों का विवाह कभी न होना चाहिए। श्री चड्ढा लिखते हैं कि जब लोग जाति के दायरे में सीमित रहेंगे तो निश्चित ही कठिनाइयाँ बढ़ेंगी। •

thearyasamaj.org

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' नवम्बर २०१४ अंक में पृष्ठ सं.२ पर प्रकाशित सम्पादकीय लेख 'मोदी जी मुझे प्रिय हैं क्योंकि..' पढ़कर अतीव उल्लास एवं आनन्द की अनुभूति हुई। सम्पादक डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने अपूर्व कौशल के साथ महत्त्वपूर्ण पर्वों को पूर्ण अहिंसात्मक तरीके से मनाने का कल्याणकारी संदेश दिया है। इसकी जितनी सराहना की जाय कम है। मैं तो यह समझता हूँ कि सम्पूर्ण समाज को सम्पादक की लेखनी और लेखन शैली का आभार मानना चाहिए, जिसके कारण ऐसे सुंदर विचार पढ़ने को मिल रहे हैं। विशेषकर ऐसे मुद्दों को लेख में उठाया गया है जिनपर आज कोई चर्चा भी नहीं करता है। लेखक ने ऐसे विषयों को भी सर्वग्राह्य बनाते हुए विचारों को व्यक्त किया है जिसके लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद।

मेरी राय में 'आर्य लोक वार्ता' का अधिक से अधिक लोगों को सदस्य बनना चाहिए और सहयोग देना चाहिए; जिससे समाज का कल्याण संभव हो सके। इस अंक में आर्य समाज इंदिरानगर लखनऊ द्वारा कश्मीर के विस्थापितों के सहायतार्थ योगदान का समाचार भी सविस्तार प्रकाशित हुआ है। धन्यवाद।

-लक्ष्मण प्रसाद आर्य
आर्य समाज इन्दिरानगर, लखनऊ

***

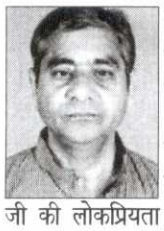

'आर्य्य लोक वार्ता' के अंक मुझे नियमित मिल रहे हैं। आभार। नवीनतम अक्टू-नवम्बर २०१४ संयुक्तांक का सम्पादकीय आलेख हमारे प्रधानमंत्री मोदी जी की लोकप्रियता के दर्शन करा रहा है। ज्ञान मानव को अन्तर्दृष्टि देता है, वह व्यक्ति व समाज में परिवर्तन का वाहक बनता है। मोदी जी का अनुभव प्रगतिसाधक है।

आचार्य राजवीर शास्त्री का लेख 'राम भक्त यथार्थ में राम जैसा बनें तो बात बने' ज्ञानवर्धक तो है ही साथ ही मेरे पूज्य पिता जी डॉ.गणेशदत्त सारस्वत के सूक्त वाक्य 'अप्प दीपो भव' का स्मरण कराता है। आपने अन्दर झांकने का संदेश दे रहा है- कहा है-

पढ़ना लिखना व्यर्थ है, व्यर्थ विद्वता-भार।
अगर आचरण में नहीं, उतरा तो बेकार।।

वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति हमारी युवा-पीढ़ी को दिग्भ्रमित कर रही है। भौतिकवाद ने ही समस्त वैदिक मर्यादाओं को ध्वस्त कर दिया है। प्रस्तुत आलेख प्रेरणा दायक है। सत्यार्थ प्रकाश वार्ता १५२ तथा वेदांजलि स्तम्भ ज्ञानदायक हैं। धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' पूर्व की भांति रोचक तथा शिक्षाप्रद है। काव्य रचनाएं भी सुन्दर हैं। १७ वर्षों से निरन्तर प्रकाशित होने वाली आपकी पत्रिका ज्ञान का भण्डार है, जो देश के कोने-कोने की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गतिविधियों की जानकारी देती है। सफल सम्पादन व प्रकाशन के लिए हार्दिक साधुवाद।

-डॉ.सुनील कुमार सारस्वत
सारस्वत सदन, सिविल लाइन्स, सीतापुर (उ.प्र.)

***

गत सितम्बर २०१४ का 'आर्य्य लोक वार्ता' का अंक मुझे बहुत पहले मिल गया था। उसके अष्टम पृष्ठ पर 'आर्य समाज लालबाग का स्थापना दिवस एवं सम्मान समारोह' शीर्षक से प्रकाशित समाचार के प्रति मैं तभी आपका आभार प्रकट करना चाहता था किन्तु अपनी अस्वस्थता तथा कुछ अड़चनों के कारण मैं पत्र नहीं लिख सका। क्षमाप्रार्थी हूँ।

मेरे अनुज डॉ.मोहनलाल अग्रवाल के जन्मदिन समारोह का आपने सचित्र वर्णन किया तथा काव्यमय शैली में उनके व्यक्तित्व की झांकी प्रस्तुत की। इससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। मेरी कामना है कि मेरे अनुज सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्न रहें तथा समाज व भाषा की सेवा करते रहें। आपको भी कोटिशः धन्यवाद।

-नन्दन लाल अग्रवाल
२००, सदर बाजार, झाँसी-२८४००१

***

विद्ययाऽमृतमश्नुते।

आप लखनऊ से 'आर्य्य लोक वार्ता'

पत्र का निरन्तर प्रकाशन करके सराहनीय कार्य कर रहे हैं। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने विषयक इस यज्ञ में मैं भी अपनी आहुति डालना चाहता हूँ। अतः रु.१२,०००/- का चेक भेज रहा हूँ। यह धनराशि संरक्षक सदस्यों के लिए नियत है। मैं तो स्वयम् आर्य्य लोक वार्ता के संरक्षण में आ रहा हूँ।

-डॉ.रूपचन्द्र 'दीपक'
३१४, आचार्यकुलम्, पतंजलि योगपीठ फेज-२, हरिद्वार-२४६४०५

***

मुझे आर्य लोक वार्ता के अक्टूबर

नवम्बर २०१४ का संयुक्तांक मिला, धन्यवाद। मुझे लखनऊ के आर्य परिजनों से जुड़ा होने की अनुभूति हुई जो बहुत सुखद रही। साथ ही विद्वानों के संपर्क में आने का सुअवसर एवं सुविधा मिली है तदर्थ पुनः धन्यवाद। अंक में श्री गौरी शंकर वैश्य जी के द्वारा स्वयंभू भगवानों पर की गई टिप्पणी बहुत ही आवश्यक है जिस पर समाज को सचेत होने की आवश्यकता है। श्री विनम्र जी की काव्य रचना 'ऋषि को नमन' बहुत प्रेरणादायक लगी, इस कर्मयोगी पुरुष को शत शत नमन। मुझे सुश्री आभा मिश्रा द्वारा रचित 'स्वर्णिम दीपावली' पढ़कर खुशियाँ सुखदायी लगी हैं विशेषकर जब अजमेर में पहाड़ों की वीरान तलहटियों में गरीब मजदूरों की झोपड़ियों में दीपावली के अवसर पर हम दीपक, बाती, तेल इत्यादि लेकर जाते हैं और वहां दीपक जलाकर उन परिवारों के साथ घुलमिलकर आनन्दित होते हैं। अतः सुश्री आभा जीको तदर्थ शुभकामनाएँ एवं प्रणाम।

-डॉ.वी.के.मिश्र
से.नि.संयुक्त निदेशक, पशुपालन, राजस्थान ४३, श्याम कालोनी, वैशाली नगर, अजमेर-३०५००४

***

प्रिय निझावनजी, आपके द्वारा संपादित 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' पुस्तक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपने अपने अर्जित वैदिक ज्ञान को संक्षेप में सरल एवं रोचक ढंग से पाठकों के समक्ष रखा है। जिसे पढ़कर व मनन करके साधारण ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकता है।

डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपने 'दो बोल' शीर्षक में विभिन्न कवियों के काव्यात्मक संदर्भों द्वारा सृष्टि के संचालन में प्रकृति और पुरुष नर-नारी की भूमिका को प्रस्तुत किया है। मेरी लेखनी में इतना सामर्थ्य नहीं कि आपके एवं डॉ. वेद प्रकाश जी जैसे विद्वानों की काव्यात्मक एवं साहित्यिक प्रतिभा के विषय में अधिक कुछ लिख सकूँ।

आपकी रचित 'भजन तरंग' ईश्वर भक्ति रस से ओतप्रोत है जो कवि हृदय को प्रकट करती है। आपने 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' पुस्तक लिखकर ग्रन्थ की श्रेणी में लाकर युगों तक अमर कर दिया है। मैं दिवंगत देवी की आत्मा के करणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ एवं कोटि कोटि नमन करता हूँ।

-प्रमोद अग्रवाल
आर्य समाज, सहारनपुर

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के संयुक्तांक

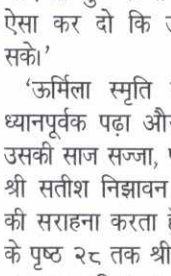

अक्टूबर नवम्बर, २०१४ में आचार्य राजवीर शास्त्री जी का लेख सारगर्भित विचारोत्तेजक एवं प्रभावी है। वास्तव में राम के भक्त तो असंख्य हैं परन्तु राम के चरित्र को अपनाने वाले नज़र नहीं आते। आपका सम्पादकीय बेबाक, सटीक एवं महत्त्वपूर्ण है। धारावाहिक 'मनुष्य का विराट रूप' तथा व्याख्यानमाला 'अनन्त की खोज' पूर्ववत् सुरुचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। 'काव्यायन' के अन्तर्गत आचार्य सतीश सत्यम एवं दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' की रचनाएँ प्रभावी एवं दमदार हैं। अन्य सामग्री भी पठनीय है।

मेरी गज़ल की द्वितीय पंक्ति में कम्पोजिंग की त्रुटि के कारण एक शब्द 'बस' छपने से रह गया है। इसे निम्नवत होना चाहिए-'काश! हमें बस तुम मिल जाते।'

मुद-मंगलमय आपको, हो यह नूतन वर्ष।
फूल खुशी के नित खिलें, मिले हर्ष-उत्कर्ष।।

-डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर
जी-०२, लोरपुर रेजीडेंसी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

***

श्री सतीश निझावन जी ने अपनी

सहधर्मिणी ऊर्मिला जी की स्मृति में जो 'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' ग्रंथ तैयार किया है वह उनकी सच्ची श्रद्धांजलि है। बहुत वर्ष पूर्व महान दार्शनिक फ्रैंकलिन की निम्न पंक्तियों को पढ़कर मैं इतना प्रभावित हो गया था कि उन्हें मैं किसी भी महान आत्मा महापुरुष की स्मृति में तैयार किए हुए ग्रन्थ में अवश्य सम्मिलित करता हूँ- 'अगर आप नहीं चाहते कि निधन के तुरन्त बाद लोग आपको भूल जाएं तो कुछ पठनीय लिख दो या कुछ ऐसा कर दो कि उस पर लिखा जा सके।'

'ऊर्मिला स्मृति मणिदीप' को मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा और मैं मुक्त कंठ से उसकी साज सज्जा, पठनीय सामग्री और श्री सतीश निझावन जी के इस प्रयास की सराहना करता हूँ। उक्त स्मृति ग्रंथ के पृष्ठ २८ तक श्रीमती ऊर्मिला जी के उज्ज्वल चरित्र, उनके उच्च विचारों, उनके कार्यकलापों का संक्षिप्त विवरण पढ़कर मैं भी कुछ लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। देखने में आया है कि पत्नी भी आराध्यदेव, पतिदेव की प्रतिष्ठा में उनके गुणों, अथक परिश्रम, उच्च सिद्धान्तों का विवरण देकर लिखती है हिम्मत जुटाकर, जिसके माध्यम से दोनों के परिवारों का ज्ञान पाठकों, हितैषियों को प्राप्त होता है। श्री निझावन जी ने अपनी सहधर्मिणी के विषय में जो कुछ लिखा है वह एक पठनीय ग्रन्थ पाठकों बुद्धि जीवियों को भेंट किया है, मैं उसके लिए हृदय से उन्हें धन्यवाद देता हूँ। यह ग्रन्थ प्रेरणा देने वाला है। आर्य्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक जी ने अपना सहयोग व मार्गदर्शन देकर श्रेष्ठ कार्य किया है।

-पाल प्रवीण
एम.एस.१२०, से.-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता का अक्टूबर नवम्बर

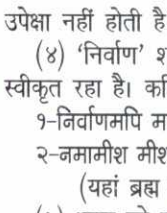

अंक समयोचित अवसर पर प्राप्त हुआ। प्रथम पृष्ठ पर 'दयानन्द संदेश' के सम्पादक श्री राजवीर शास्त्री के असामयिक निधन को जानकर बहुत दुःख हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे। दिव्य गुणों से युक्त सन्मार्ग दर्शक को हम सभी ने खो दिया।

सम्पादकीय में मोदी जी सबसे हटकर हैं, वह क्यों? क्योंकि वे जो कार्य करते हैं वैदिक विचारधारा से ओतप्रोत होते हैं, वे जो कदम उठाते हैं, अत्यधिक सोच विचार कर दूरदर्शिता से अपने अन्तःकरण से तौलकर ही व्यवहार में लाते हैं, यही कारण है कि वे जनप्रिय हैं।

'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' में बताया है कि ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता, क्योंकि वह न्यायप्रिय है। अच्छा कार्य, अच्छा परिणाम। 'वेदांजलि' में सर्वजन हिताय मंत्र है। यह सभी को मालूम होना चाहिए कि वेद ईश्वर की वाणी है। श्री आनन्द कुमार जी का 'मनुष्य का विराट रूप' अत्यधिक शिक्षाप्रद है। श्रद्धाभक्ति में सन्निहित भावों का मनोविश्लेषण बहुत ही सराहनीय और अनुकरणीय है। धैर्य शांति समाहित गुणों पर अच्छा प्रकाश डाला है। शिष्ट समाज में सद्व्यावहारिकता का विशेष महत्व है। किसी से परस्पर बढ़ चढ़कर न बोलो, न कटु व्यंग्य बोलो जो किसी के हृदय को चुभ जाये। वाणी में सरसता, नम्रता व मिठास होनी चाहिए। 'अनन्त की खोज' व्याख्यानमाला एक मनोवैज्ञानिक लेख है। पूर्व और पाश्चात्य विचारधारा का अन्तर बताया है। पाश्चात्य तर्कप्रियता विचारधारा को प्रधानता देता है, जबकि पूर्व महत्व नहीं देता जो सत्य अनुभव में आता है। यही भारत दर्शन का अभिप्राय है। 'काव्यायन' में सभी कविताएँ महत्वपूर्ण हैं। अवलोकनीय है 'गुजरात की धरा से' आचार्य सतीश सत्यम, इसके अलावा गौरीशंकर 'विनम्र' की कविता 'ऋषि को नमन', फिर सूफी फकीर रहीम की 'तुम मिल जाते' तत्पश्चात डॉ.मिर्जा हसन नासिर की कविता विशेष आकर्षक लगी।

-प्रमोद कुमारी
एम.एस.३७, से.-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

आत्यावश्यक

(1) सहयोग राशि 'आर्य लोक वार्ता' के नाम से नकद/चेक/धनादेश द्वारा कार्यालय के पते-19/838, प्रथम तल, रिंग रोड, इन्दिरा नगर, लखनऊ-226016 पर भेजें।

(2) बैंक आफ बड़ौदा की किसी भी शाखा में नकद जमा करें तथा कर्यालय में सूचना दें। (विवरण पृ.8,कालम-5 पर अंकित है।)

(3) इसके अलावा सहयोग राशि नकद/चेक द्वारा इलाहाबाद बैंक की किसी भी शाखा में भी जमा कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

खाता धारक -आर्य लोक वार्ता
खाता सं.-5022 3541 717
खाते का प्रकार-बचत खाता, बैंक-इलाहाबाद बैंक, ए-869, इन्दिरा नगर, लखनऊ।
IFSC - ALLAO 211122

(पृष्ठ 3 का शेष.....)

जिज्ञासा और समाधान....

.....

तेरी मधुर याद जब जागे, हो जाता कैसा उन्माद,
अपने में ही खोया-सा मन अपने से करता सम्वाद,
कब होगा यह यज्ञ शेष, कब होगी अन्तिम आहुति,
कब इस आहत जीवन का प्रभु कर लोगे स्वीकार प्रसाद।

(ऋक्.७/८६/२)

मंत्रोच्चार करते-करते वे समाधिस्थ हो गये। कुछ क्षण बाद आँखें खोलीं। मधुर स्वर में बोले, "हे दयामय, हे सर्वशक्तिमान, तेरी यही इच्छा है। तेरी इच्छा पूर्ण हो। तैने अच्छी लीला की" और ओम् को उच्चारण करते हुए प्राणों को मुक्त कर दिया। जीवात्मा प्रियतम से मिलकर पूर्णकाम हो गयी। कविवर नाथूराम शर्मा 'शंकर' के शब्दों में :

शंकर दिया बुझाय दिवाली को देह का
कैवल्य के विशाल भवन में बिला गया।

यह सभी जानते हैं कि महर्षि की इस निर्वाण-दशा के दृश्य ने भौतिक विज्ञान वेत्ता- नास्तिक गुरुदत्त विद्यार्थी को आस्तिक बना दिया था। निर्वाण की जगह बलिदान शब्द द्वारा क्या एक योगी की इस आध्यात्मिक गरिमा या विशिष्टता की उपेक्षा नहीं होती है?

(४) 'निर्वाण' शब्द मोक्ष या मुक्ति के अर्थ में भारतीय साहित्य परम्परा में स्वीकृत रहा है। कतिपय उदाहरण देखिए-

१-निर्वाणमपि मन्येऽहमन्तरायं जयश्रियः। - किरातार्जुनीय-११/६९
२-नमामीश मीशान निर्वाण रूपं, विभुंव्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपम्। -मानस, उ.कां.
(यहां ब्रह्म को निर्वाणरूप तथा वेदस्वरूप कहा गया है।)

(५) ध्यान रहे महर्षि के निधनोपरान्त जिन हमारे अग्रजों ने आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाया- उनमें अधिकांश चारों वेदों के ज्ञाता, संस्कृतज्ञ, अपूर्व सूझबूझ और चिन्तन क्षमता से परिपूर्ण थे। पं.गुरुदत्त विद्यार्थी, स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव, स्वामी दर्शनानन्द, पं.लेखराम, पं.चमूपति, स्वामी वेदानंद, महात्मा नारायण स्वामी, पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय की कोटि का क्या कोई विद्वान् आज मौजूद है? उन्होंने महर्षि की मृत्यु को 'निर्वाण' शब्द दिया। उन तपःपूत विद्वानों के चिन्तन विचार को पीछे ढकेलकर आज जो परिवर्तन और संशोधन किये जा रहे हैं- चिन्ताजनक हैं।

—डॉ.वेद प्रकाश आर्य

thearyasamaj.org

धारावाहिक-(49)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

बौद्ध ग्रंथों में ऐसे व्यक्तियों की ओर संकेत करके कहा है- "जो पूछा है वह नहीं कहता, पूछने पर दूसरी बात कहता है। यह अपनी ही प्रशंसा करने वाला पुरुष हमें अच्छा नहीं लगता।"(-जातक)

यथासंभव अपेन व्यक्तित्व को सरल स्पष्ट रखना चाहिए; इससे भ्रम-संदेह मिटता है और लोग एक-दूसरे के अधिक निकट आ जाते हैं। इस संबन्ध में मनु का निम्नलिखित आदेश मान्य है-

वयसः कर्मणोऽर्थस्य श्रुतस्याभिजनस्य च।
वेशवागबुद्धिसारुप्यं आचरन्विचरेदिह।।

अर्थात्- आयु, क्रिया, धन, विद्या और कुल- इनके अनुरूप वेश, वचन, बुद्धि रखता हुआ संसार में रहे।

(ञ) सावधानी :- अधिक न लिखकर अब हम एक ही बात और कहना चाहते हैं- वह यह कि भलमंसाहत की आवश्यकता बड़े-बड़े अवसरों पर, बड़ी बड़ी बातों में या बड़े लोगों के बीच ही में नहीं पड़ती। किसी पाश्चात्य पंडित ने कहा है कि छोटी बातों में सौजन्य दिखाना ही शिष्टता है-'Courtesy is nobility in little things.' बड़े आदमी को छोटी छोटी बातों में विशेष सावधान रहना चाहिए, बड़ी बातों में तो छोटे लोग भी सावधान मिलते हैं। छोटी बातों में सावधानी इस ढंग से होती है- अतिथि को और किसी सम्मान्य व्यक्ति को यथायोग्य आदर देने में न चूके; अपने साधारण वायदे को भी झूठा न होने दे; किसी मिथ्या आश्वासन न दे; ऐसे आसन पर बैठे जो दूसरे के बैठने का न हो-

तदेवासनमन्विच्छेद्यत्र नाभिषजेत् परः
-वनपर्व

छोटे से छोटे आदमी के भी आत्म सम्मान का ध्यान रक्खे, उनकी सुविधा असुविधा को महत्त्व दे, दूसरों के काम में हस्तक्षेप न करे और अनुचित स्थान पर कुदृष्टि न डाले। 'नज़र अच्छे दिलों को भी कभी बदनाम करती है'-अकबर। दूसरे का रहस्य जानने की चेष्टा न करे- 'पररहस्यं नैव श्रोतव्यम्'-कौटिल्य। पत्र का उत्तद देने में प्रमाद नहीं करना चाहिए क्योंकि पत्र भेजनेवाला उत्तर पाने का विश्वास करके ही पत्र लिखता है; इसलिए उत्तर न देना उसके साथ विश्वासघात करना है। इससे असज्जनता और क्रूरता प्रकट होती है।

अमेरिका के मान्य मनीषी एमर्सन का यह मत सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि कुछ-न-कुछ आत्मत्याग करने से ही शिष्टाचार सम्पन्न होता ह-'Good manners are made up of petty sacrifices.' सभ्यता की रक्षा तथा सद्व्यवहार की सफलता के लिए अहंकार और स्वार्थजन्य वासनाओं का बलिदान करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। लोकरंजन का यही उपाय है।

सामाजिक जीवन की पवित्रता

१-अनैतिकता की वृद्धि का रहस्य

आजकल लोग विविध उपायों से अपराधों को छिपाने की चेष्टा करते हैं। सबसे सीधा उपाय है-'खाइ के परि रहु, मारि के टरि रहु।' अर्थात्, भोजन को पचाने के लिए लेटना और कुकर्म को पचाने के लिए घटनास्थल से हट जाना चाहिए। नित्यप्रति कितने ही ऐसे दुष्कर्म होते हैं जिनके करने वालों का पता नहीं चलता। दूसरा उपाय है- अपने दोष को किसी निर्दोष प्राणी के सिर मढ़ देना और उसे फँसाकर स्वयं बच निकलना। तीसरा ढंग है-'राम राम जपना, पराया माल अपना।' धर्म या किसी प्रतिष्ठित संस्था की आड़ में, देश भक्ति या सज्जनता का पाखंड रचकर बहुत-से दंभी समाज की आंखों में धूल झोंकते रहते हैं। ध्यान से देखिए तो एक नहीं, अनेक धर्मध्वजी, मार्जारलिंगी, कपट मुनि मिलेंगे, जो स्वभाव-चरित्र से नीच होते हुए भी वेश-भूषा, बात-व्यवहार से सभ्य बने रहते हैं, भीतर से कुटिल होते हुए भी ऊपर से सीधे लगते हैं, पाप की कमाई करते हुए भी थोड़ा बहुत दिखावटी दान देकर दानी-पुण्यात्मा कहलाते हैं। कितने ही उल्लूबसन्त सन्त बने हुए हैं और कितने ही मायावी पैसे लेकर माया-मुक्ति की युक्ति बताने का व्यापार कर रहे हैं। 'मुख में राम, बगल में छुरी' के दृष्टान्त नित्य देखने को मिलते हैं। इस प्रकार चरित्रहीनता सारे समाज में व्याप्त है, परन्तु वह व्यक्त कम होती है। धूर्त, धनी और अधिकार सम्पन्न लोग अपने दुराचारों पर आसानी से पर्दा डाल देते हैं अथवा यह कहिए कि स्वयं हंस, परमहंस या बगुलाभगत ही बनकर दुसरों को उल्लू बना देते हैं। पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव से सर्व साधारण में यह प्रवृत्ति बढ़ गई है कि किसी भी उपाय से, चाहे वह उचित हो या अनुचित, कार्य की सिद्धि ही श्रेयस्कर है। लोग किसी भी रीति से अपना काम निकाल कर समर्थ बनना चाहते हैं। समर्थ के दोष दोष नहीं गिने जाते- 'समरथ को नहिं दोष गोसाईं' -तुलसी। ऊपरी आडम्बर से भीतरी पोल का पता नहीं चलता। मिथ्या व्यक्तित्व से धोखा होता ही है।

इनके अतिरिक्त पाप-अनाचार को ढँकने के और भी कितने ही उपाय आधुनिक समाज में प्रचलित हैं। बहुत-से लोग इसका व्यवसाय करते हैं। बड़े से बड़ा अपराध करके किसी तर्क-सतर्क चालाक वकील के पास जाइये; वह फीस लेकर पहले तो यह सिखायेगा कि न्यायालय में अभियोग को स्वीकार मत करना; इसके बाद सच को झूठ और झूठ को सच प्रमाणित करके संभवतः आपको दण्ड से मुक्त करा देगा। अपराधी की दृष्टि में वकील भगवान् से भी अधिक काम का है। पुलिस के अनुग्रह से भी बड़े-बड़े अपराध दब जाते हैं। डाक्टर वैद्य भी समय पर इस काम में बड़े सहायक सिद्ध होते हैं। व्यभिचारियों की लाज वे ही बचाते हैं। और हामारे पत्रकार तथा पत्र-सम्पादक भी अपने कृपापात्रों और संरक्षकों के विरुद्ध लोकापवाद को रोकने में कम काम नहीं करते। दर्जी, धोबी, नाई तक असभ्य को सभ्य जैसा बना देते हैं। लोक में तो इनसे काम चल जाता है। परलोक के पाप-पाचक हैं पंडे और पंडितजी। पैसे लेकर पंडे यजमान के पाप-प्रक्षालन का भार अपने ऊपर ले लेते हैं और पंडितजी गोदान के सवा रुपये लेकर महाकुपंथी को भी विष्णुलोक का टिकट दे देते हैं। इस प्रकार के अन्धविश्वासों से भी गुप्त अपराधों की वृद्धि होती है। मूढ़ लोग इस भरोसे छिपकर अपराध करते रहते हैं कि पाप का रंक हलका होता है, पंडाजी उसे नदी में धो देंगे और पंडितजी पतित से पतित को भी पाप-पारावार से पार लगा देंगे। उन्हें बुराई करने की प्रेरणा मिलती है और समाज के सामने एक बुरा आदर्श उपस्थित होता है।

('मनुष्य का विराट् रूप' से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला (४)

अनन्त की खोज

-महात्मा आनन्द गिरि-

स्वरूप की उपलब्धि, आत्मस्थिति न तो बहुत पढ़ने से होती है और न बहुत सुनने से।

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो।
न मेधया न बहुना श्रुतेन।।

इसका सम्बन्ध जीवन की अवधारणा से है। जीवन की पद्धति और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से है। आत्मापलब्धि क्रियायोग से है। क्रियायोग का अर्थ है प्रत्येक कर्म और चेष्टा का साधना में बदल जाना। साधना के प्रति आग्रह और निष्ठा तर्क से पैदा नहीं होती। इसके लिए अनुभव से पैदा होने वाले विश्वास की आवश्यकता है। अनुभव जन्य विश्वास ही श्रद्धा है। जबतक श्रद्धा की प्राप्ति नहीं होगी अध्यात्म में गति असम्भव है। वेद में श्रद्ध को देवी के रूप में सम्बोधित किया गया है। श्रद्धा ऐश्वर्य का उच्चतम बिन्दु है अतः श्रद्धा से अग्नि को प्रज्वलित करना चाहिए ऐसा ऋचा में कहा गया है।

श्रद्धया अग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः।
श्रद्धां भगस्य मूर्धनि वचोवेदयामसि।।

श्रद्धा का अर्थ है गति करना। गतिशील अर्थात् चलने वाला व्यक्ति ही अपने लक्ष्य तक पहुँच पाता है। गीता में कहा गया है 'श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्' अतः आत्मज्ञान के लिए श्रद्धा अर्थात् गति परम अनिवार्य है। अनुभव के प्रकाश में ही गति सम्भव है। यह यात्रा अन्धविश्वास के अन्धकार में नहीं की जा सकती। इस अनुभव के लिए अनुभव सिद्ध मार्ग दर्शक मिलना आवश्यक है। जलता हुआ दीप ही बुझे हुए दीपकों को जला सकता है। अग्नि से ही अग्नि जगाई जाती है।

'अग्निना अग्निः समिध्यते'

आत्मज्ञान के वक्ता और व्याख्याता बहुत हैं किन्तु गुरु के चरणों में बैठकर विधिवत् आत्म प्रत्यक्ष किए हुए वक्ता दुर्लभ हैं। श्रोता तो बहुत मिल सकते हैं किन्तु सुनकर समझने वाले भी उतने ही दुर्लभ हैं। कहने का तात्पर्य है कि आत्म साक्षात् के लिए गति अर्थात् अभ्यास ही एक मात्र साधन है और अभ्यास से पहले उस अनुभव की आवश्यकता है जो इस मार्ग के लिए आवश्यक निष्ठा प्रदान कर सके। यह अनुभव पाने के लिए देखना आना चाहिए। घटनाएँ जो हमारे जीवन में होती हैं या अन्यों के जीवन में, अपने साथ सत्य का संदेश लाती हैं। सामान्य बुद्धि घटना के स्थूल रूप को देखती है किन्तु उसमें निगूढ़ तत्व को नहीं देख पाती है। अनुभवी सिद्ध महापुरुष छोटी छोटी घटनाओं से ही साधक को वह बोध करा देते हैं जो हजार ग्रन्थ भी नहीं करा सकते।

एक युवक एक महात्मा के पास पहुँचा। उसने प्रार्थना की कि 'महाराज मुझे प्रवज्ञा प्रदान की जाए।' महात्मा ने उससे पूछा-'क्या कारण है तुम संसार के सुख-भोग छोड़ना चाहते हो?' उसने कहा-'महाराज, मैंने संसार को देख परख लिया है। यह संसार छलना है, दुखपूर्ण है। इस मिथ्या संसार में जीने का कोई कारण दिखाई नहीं देता। महात्मा गम्भीरता से सुनते रहे जब युवक अपनी बात कह चुका तो उन्होंने पूछा-'बेटा अगर संसार ऐसा ही है तो ये हजारों मनुष्य कैसे जीते हैं?' युवक ने कहा-'महाराज, मैं यह नहीं जानता। किन्तु इतना समझ पाया हूँ कि यह संसार जीने के योग्य नहीं है। आप मुझे दीक्षा दें। मैं संसार में जीना नहीं चाहता।' अनुभवी महात्मा ने उससे कहा-'जाओ यह मालूम करो कि वह क्या कारण है जिसके लिए संसार में लोग जीते हैं? जब तुम इस सत्य को खोज लाओगे तुम्हें प्रवज्ञा प्रदान कर दी जाएगी।' वह जिज्ञासु सत्य की खोज में चल पड़ा। जंगल से नगर में आया। उस समय प्रातःकाल था। बाजार खुल रहा था। वह एक दूकान के आगे रुक गया। सोचा पहले इस दूकानदार से ही क्यों न पूछ लूँ वह इस संसार में क्यों जी रहा है? वह दुकान पर पहुँचा और 'एक सवाल है' उसने आवाज लगाई। दूकानदार बौखला गया उसने कहा- 'अरे बाबा अभी बोहनी न बट्टा तुम सवाल लेकर आ गये। जाओ बाद में आना।' 'सेठ जी रोटी-पैसे का सवाल नहीं है एक बात पूछना चाहता हूँ' जिज्ञासु ने नम्रता से कहा। 'कहिए क्या चाहते हैं?' दूकानदार ने पूछा। 'कृपया यह बता दीजिए कि आप क्यों जी रहे हैं?' जिज्ञासु ने पूछा। (अर्थापत्ति से इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि आप तत्काल मर क्यों नहीं जाते) अनपेक्षित प्रश्न से लाला सिहर गये। लाला ने सोचा प्रातःकाल का समय है गलत उत्तर दे दिया तो कहीं, वैसा ही न हो जाए! अस्तु सच बोलना चाहिए। 'महाराज मैं तो धन के लिए जीता हूँ।' उसने सीधा सा उत्तर दिया-'धन के अतिरिक्त और कोई मुझे प्रिय नहीं है। पुत्र और पत्नी भी तभी तक प्रिय हैं जब तक मेरे धन का संरक्षण करते हैं।' दूकानदार ने सच्चाई से मन की बात प्रकट कर दी। उत्तर से सन्तुष्ट होकर जिज्ञासु और आगे बढ़ा। उसने एक द्वार पर शहनाई बजते देखी। सोचा इस गृहपति से भी इस प्रश्न का उत्तर ले लिया जाय। उसने द्वार खटखटाया, एक सुन्दर युवक ने दरवाजा खोला। उसने महाराज को प्रणाम किया और कहा 'क्या आदेश है?' 'एक सवाल है' जिज्ञासु ने कहा। 'आदेश करो महाराज, भोजन वस्त्र जो कहो सेवा में प्रस्तुत करूँ?' 'नहीं नहीं मुझे कुछ नहीं चाहिए। मैं केवल एक जानकारी लेना चाहता हूँ।' 'पूछिये'। 'बेटा यह बताओ तुम क्यों जी रहे हो?' प्रश्न सुनकर युवक कुछ क्षण मौन रह उसने आवाज दी और पत्नी को बुलाया। युवक ने कहा- 'देवि, महाराज को प्रणाम करो।' स्त्री ने वैसा ही किया। युवक ने कहा-'महाराज, मैं इसके लिएं ही जी रहा हूँ इससे अधिक मुझे कोई प्रिय नहीं। यही मेरी जिन्दगी है।' प्रश्न का उत्तर सुनकर जिज्ञासु चल पड़ा।

मार्ग में नदी पड़ी। घाट पर एक प्रौढ़ा वस्त्र धो रही थी। जिज्ञासु ने सोचा क्यों न इससे भी यह प्रश्न पूछ लिया जाय। यह स्त्री भी तो एक वर्ग की प्रतिनिधि है। वह उसके पास गया और प्रश्न रख दिया। प्रौढ़ा ने विस्मित होकर उसकी ओर देखा। बोली-'देखते नहीं हो? मेरी सूना मांग? विधवा हूँ। यह एक पुत्र ही मेरा प्राण है।' उसने घाट पर खेल रहे ६ वर्ष के बच्चे की ओर इशारा किया। 'इस बच्चे के लिए ही जी रही हूँ।' वह जिज्ञासु वन को लौट गया। उसने जान लिया था कि संसार में लोग किस हेतु से जी रहे हैं। दूकानदार धन के लिए, युवक स्त्री के लिए और प्रौढ़ सन्तान के लिए, संघर्ष करते हुए, दुःख रूप संसार में जी रहे हैं। प्रश्न का उत्तर उसने लगभग ढूँढ ही निकाला था। महात्मा जी को उत्तर देकर वह प्रवृज्या ले ही लेगा

ऐसा सोचता हुआ वह कुटी पर पहुँचा। 'आ गये पुत्र! कहो क्या सत्य तुमने देखा?' महात्मा ने पूछा। 'महाराज, संसार में लोग विभिन्न कारणों से जी रहे हैं। कोई धन के लिए तो कोई स्त्री के लिए तो कोई सन्तान के लिए जी रहा है।'-उसने कहा। 'नहीं नहीं, जीने के लिए इतने सारे कारण नहीं हो सकते। यह सत्य नहीं है। पुत्र सत्य एक है। उस सत्य की तलाश करो। जब तक वह एक सत्य जो परम है नहीं खोज लोगे, प्रवृज्या नहीं मिलेगी। जाओ फिर खोज करो।' महात्मा ने कहा और उसे पुनः लौटा दिया।

जिज्ञासु पुनः दूकान के आगे पहुँचा। अब दृश्य कुछ और ही था। दूकान जल रही थी और दूकानदार चीख रहा था। चारों ओर एकत्रित लोग पानी मिट्टी फेंक कर आग बुझाने में सहायता कर रहे थे। तेज वायु आग को बढ़ाती जा रही थी। बुझने की सम्भावना नहीं दिखती थी। रोते हुए दूकानदार ने कहा 'अरे भाई, कोई अन्दर से मेरी पेटी निकाल लाओ। मैं रुपये में दस पैसे का हिस्सा दूँगा।' लाला ने भीड़ की ओर आशा भरी दृष्टि से देखा किन्तु कोई भी आग में घुसने को तैयार नहीं हुआ। ज्यों ज्यों अग्नि की लपटें बढ़ती गयीं सेठ का आफर बढ़ता गया। आखिर वह इस सीमा पर भी आ गया कि आधा आधा बाँट लिया जाय। पर किसी तरह कोई पेटी को अन्दर से निकाल लाये। जिज्ञासु सब कुछ सुन रहा था किन्तु समझ न सका कि आखिर लाला अपने प्रिय धन को क्यों आधा बांट देने की बात कर रहा है। स्वयं ही अन्दर से पेटी क्यों नहीं निकाल लाता। हो सकता है आग की हड़बड़ी में लाला ठीक प्रकार सोच न पा रहा हो अस्तु जिज्ञासु ने लाला को सुझाया- 'क्या पागल हो गए हो? स्वयं क्यों नहीं निकाल लाते?' किं कर्त्तव्यविमूढ़ लाला ने फटी फटी आंखों से जिज्ञासु की ओर देखा। कहने लगा-'देखते नहीं हो आग बढ़ी हुई है, लपटें उठ रही हैं। शहतीरें तड़क रही हैं अन्दर कैसे जा सकता हूँ' और वह फिर धाड़ मार कर रोने लगा। 'अरे? तो क्या हो गया?' जिज्ञासु ने कहा-'आखित तुम धन के लिए ही तो जी रहे थे। मर जाओगे तो क्या होगा? धन नष्ट हो जाने पर तुम किसके लिए जिओगे?' 'न बाबा धन जले या बचे मैं अन्दर नहीं जा सकता।' सेठ निर्णयात्मक स्वर में बोला। 'अरे तुम तो कहते थे कि मैं धन के लिए जीता हूं क्या उस दिन झूठ बोला था?' जिज्ञासु ने पूछा। जिज्ञासु ने अनुभव किया कि कोई ऐसी भी चीज इस आदमी के पास है जिसके लिए यह धन छोड़ सकता है। क्या हो सकती है वह चीज? जीवन- जीवन वह तत्व है जो किसी भी मूल्य पर नहीं छोड़ा जा सकता। जीवन यानी चैतन्य अर्थात् आत्मतत्व। यह लाला धन छोड़कर जीवन को बचा रहा है। ओह! यह सब झूठ है कि कुछ लोग केवल धन को ही प्यार करते हैं और धन के लिए ही जीते हैं। सत्य तो यह है कि आत्मा के लिए धन छोड़ा जा रहा है।

(क्रमशः)

thearyasamaj.org

काव्यायन

देश गान

❑रामकुमार गुप्त

हमारा प्यारा देश महान।
इसकी माटी कंचन, इसका पानी सुधा समान।।
सागर जिसके चरण पखारे।
रवि, शशि नित आरती उतारे।
मस्तक पर शोभित है जिसके-
शुभ्र मुकुट हिमवान।।
वेदों की आदर्श ऋचाएँ।
अमर शहीदों की गाथाएँ।
योगिराज ने दिया यहीं पर-
कर्म योग का ज्ञान।।
पुरी, अयोध्या, मथुरा, काशी।
ऋषि, मुनि, साधु, संत, संन्यासी।
भक्ति, ज्ञान, वैराग्य त्रिवेणी-
का है पावन स्नान।।
हरिश्चन्द्र, दधीचि से त्यागी।
हुए जहाँ वन्दा वैरागी।
राणा, शिवा, सुभाष, भगतसिंह-
हैं भारत की शान।।
लक्ष्मी, दुर्गा, सी क्षत्राणी।
सारन्धा हाड़ी की रानी।
नहीं पद्मिनी के जौहर को-
भूला राजस्थान।।
केशव, तुलसी, सूर, कबीरा।
बंकिम, शरद, जायसी, मीरा।
राधा-माधव के गुन गाते-
विद्यापति रसखान।।

-निकट मंगलादेवी मंदिर, गोला गोकर्णनाथ, खीरी-262802

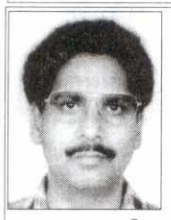

लिख दीजिये

❑डॉ. कैलाश निगम

चेतना जगा के युग-चेतना-पटल पर
अपने उदात्त सुविचार लिख दीजिये।
जहाँ-जहाँ तम के खिले हों काले फूल वहाँ
अपनी प्रभा से उजियार लिख दीजिये।
अज्ञता-तिमिर की समस्त मानसिकता पे
ज्ञान का असीम पारावार लिख दीजिये।
वाटिका में आयेगा बसंत फिर एक बार
एक-एक पाँखुरी पे प्यार लिख दीजिये।।

-4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

मुहावरे युक्त दोहे

❑राजा भइया गुप्त 'राजाभ'

कल भाटों से घिरे थे, ओढ़े वस्त्र महान।
अब घर के ना घाट के, ज्यों धोबी का स्वान।।

लोकतन्त्र घर में नहीं, परिजन हो जब भाट।
मुखिया भ्रम में अहर्निश, क्यों न खड़ी हो खाट।।

हाथ पकड़ कर चल दिये, हो शायद कल्याण।
फिर भी दिल्ली दूर है, और असम्भव त्राण।।

है सन्देहास्पद बहुत, भिन्न मतों की प्रीत।
दिवा स्वप्न दृढ़ता यहाँ, है बालू की भीत।।

भानमती तैय्यार है, अपना कुनबा जोड़।
पा न सकेगी भूल भी, राष्ट्रवाद का तोड़।।

वोट बैंक की जड़ हिली, खतरे में अस्तित्व।
लोक लाज का भय नहीं, कहता नित्य कृतित्व।।

-बी2/356, सेक्टर-ए, जानकीपुरम, लखनऊ

दयानन्द को प्रणाम है!

❑दिनेश मिश्र 'राही'

शान्ति उपदेश नित्य मिलते संदेश जहाँ
भारत की देवभूमि विश्व में ललाम है।
ज्ञानज्योति दित्यज्योति जलती सदैव जहाँ
आसन नियम प्रत्याहार प्राणायाम है।
ऋषि-निर्वाण हुआ जिस दिव्य भूमि पर,
अजमेंर धरती का तीर्थ पुण्यकाम है।
धर्म के प्रतीक ज्ञानपुंज धर्मकर्म विद्
महाऋषि पूज्य दयानन्द को प्रणाम है।।

-अम्बिका पुरम, आनन्द नगर, सीतापुर

[महर्षि को प्रणाम है' शीर्षक उपर्युक्त छंद 'आर्य लोक वार्ता' के गतांक में भूल से श्री जयप्रकाश शुक्ल के नाम से प्रकाशित हो गया है, जबकि इसके वास्तविक रचयिता श्री दिनेश मिश्र 'राही' हैं। अतः इसे वास्तविक रूप में पुनर्प्रकाशित किया जा रहा है। यह एक सम्पादकीय चूक है, जिसके लिए मैं खेद व्यक्त करता हूँ। -सं.]

हकीकत को छुपाया जा रहा है!

❑डॉ.मिर्ज़ा हसन नासिर

हकीकत को छुपाया जा रहा है,
फसाना फिर बनाया जा रहा है।
चरागों को बुझाया जा रहा है,
ये किसका घर जलाया जा रहा है।
चतुर्दिश पल रही है आज नफरत,
मुहब्बत को रुलाया जा रहा है।
वफाएँ सब हमारी रायगाँ हैं,
हमें नित आजमाया जा रहा है।
चमन में बुलबुलें भी रो रही हैं,
गुलों पर जुल्म ढाया जा रहा है।
हमारे बाद भी महफिल में अब तक,
हमारा गान गाया जा रहा है।
लो! अब आने को हैं 'नासिर' बहारें,
हमें सपना दिखाया जा रहा है।

-जी-02, लोरपुर रेजीडेन्सी, न्यू हैदराबाद, लखनऊ

उड़ गया पंछी

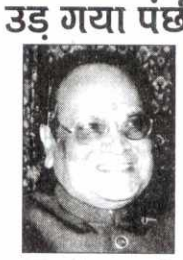

❑उमेश 'राही'

तोड़कर देह पिंजरा उड़ गया पंछी,
सांस के पहेरुए देखते रह गए।
न रटा राम का नाम, बस जपा मुक्ति का मंत्र।
रोक पाए बंधन नहीं, विफल हो गए षडयंत्र।।
कोई न देख पाया, कब पर लगे,
एक दूजे से पूछते ही रह गए।
जो जला वह बुझेगा, जो चला वह रुकेगा।
घिरौंदा बह गया तो, घर नया भी बसेगा।।
जाने कैसा इम्तिहाँ, कब फैसला,
हम जिंदगी का बस ग्रंथ पढ़ते रह गए।
छुट गया अभिमान सब, धन लोग साधन सभी।
न साथी काम आया, न स्वप्न जो देखा कभी।।
सजाकर पालकी, देह-दुल्हन चली,
पी का पता हम पूछते ही रह गए।।

-कला सदन, 363ए/4, मोती नगर, लखनऊ

कालजयी काव्य

सरयू तट की एक सुबह

❑जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिन्द'

तारों के विभूषण समेट निज अंचल में,
सुन्दरी निशा थी चली, विश्व जगा जाता था।
शैया छोड़ अम्बर की विरह विदीर्ण उर,
कान्ति हीन चन्द्र पीछे पीछे भगा जाता था।
सरयू में स्नान हेतु उतरी अरुणिमा थी,
प्रेम में दिनेश के 'मिलिन्द' पगा जाता था।
विषय-विकार हृदयों से फिरा जा रहा था,
पर्व मानों पावन प्रभा का लगा जाता था।।

झलता दिनेश था खमण्डल पै आभा निज,
प्रकृति प्रिया की मंजु शोभा बढ़ी जाती थी।
पल्लव हरीतिमा पै पीतिमा प्रभात की या,
पन्नों पै सुवर्ण वाली जाली मढ़ी जाती थी।
बोलते विलोक बिहँगों को वृक्ष वृन्दों पर,
उर मध्य सुषमा अनन्य चढ़ी जाती थी।
जँचता यही था मानों किन्नर समूह द्वारा-
भक्ति गरिमा की भव्य गाथा पढ़ी जाती थी।।

पं.देवदत्त त्रिपाठी आयुर्वेदाचार्य

ऋषितुल्य नाना जी आचार्य देवदत्त वैद्य

❑जयप्रकाश शुक्ल

हरदोई जनपद में गोनी,
ऋषियों की पावन धरती है।
जप यज्ञ होम पूजा के स्वर,
आवाजें गूँजा करती हैं।

भू स्थली वही थी आर्यों की,
वह पावन धरती आज वहाँ।
कवियों के प्रवचन सम्मेलन,
था सुर संगम संगीत जहाँ।

वेदों के सच्चे मंत्रों को
जिस धरती पर हमने जाना।
थे काई और नहीं वह
मेरे ही थे गुरुवर नाना।

वस्त्रों में उनका पहनावा
कुर्ता धोती टोपी सदरी।
हाथों में पथ की साथी
कुछ टेढ़ी झुकी हुई कुबरी।

पथ पर गति संचालित करती
रहती थी उनके सदा पास।
दिन होता या प्रहर रात्रि
करती थी अपना प्रकाश।

टक टक उसकी ध्वनि सुनकर
सब जीव जन्तु भग जाते थे।
आते जाते जो भी मिलते
सब श्रद्धा से झुक जाते थे।

ऋषियों में सप्त ऋषि थे वे
जन जन के वह गुरुवर थे।
आकर विश्राम किया करते
जिनकी छाया में तरुवर थे।

वैदिक मंत्रों की ध्वनि होती
स्वाहा के स्वर गूँजा करते।
आर्यों के उस मंदिर में
संध्योपासन रोज हुआ करते।

निकट वृक्ष था पीपल का
झूमा करती डाली डाली।
बहती बयार के झोंकों से
हर दम बजती रहती ताली।

मीठा था जल स्रोत कुआँ
झम की आवाजें झन्नाहट।
हर समय सुनाई पड़ती थी
लोगों के आने की आहट।

जाड़ा गर्मी या वर्षा ऋतु हो
सब मौसम में आनन्दित मन।
थी प्रकृति समय की वचनबद्ध
था नहीं प्रकृति का अरवाहन।

श्री देवदत्त जी आर्य ऋषि
सच का ही रस पान किया।
हरिजन दुर्जन या कोई जन हो
पीड़ा से मुक्ति प्रदान किया।

वैसे उस युग का अन्त हुआ
यादों की गाथा कौन कहे।
छुप गये अंधेरी यादों में
वे सप्त ऋषि अब नहीं रहे।

ओ३म् शब्द अंतिम कह कर
अपनी साँसों को रोक लिया।
शोक संतप्त परिवार सभी
इस जग से नाता तोड़ लिया।

आदर्शों की उस परम्परा की
ज्योति आज भी जलती है।
आर्य लोक की यह वार्ता
जन जन के बीच पहुँचती है।

इतिहास अमर हो जाता यदि
हो जाता महिमा का मंडन।
आने वाले कल को भी
होता हम सबका पद वंदन।

-अशियान कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ

(दि. 22.10.14 को 'देव-जयन्ती' के अवसर पर ग्राम-गोनी चतुर्खेड़ा, हरदोई में आयोजित यज्ञ में कवि द्वारा पठित)

thearyasamaj.org

राजस्थान-समाचार

महिलाओं ने उत्साहपूर्वक डालीं आहुतियाँ

कोटा, ७ नवम्बर। सत्संग के माध्यम से सत्य और असत्य की पहचान होती

है तथा कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का विवेक सत्संग से ही संभव है। सत्संग का अर्थ है अच्छे व सत्य मार्ग पर चलने वाले लोगों का साथ। उक्त विचार आर्य विद्वान् राम प्रसाद याज्ञिक ने आर्य समाज विज्ञान नगर में आयोजित पूर्णिमा वैदिक सत्संग समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में व्यक्त किये। कार्यक्रम का प्रारंभ आर्य विद्वान् व डीएवी स्कूलके धर्म शिक्षक शोभाराम आर्य के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ से हुआ। यज्ञ में सभी महिलाओं ने उत्साह पूर्वक वेदमंत्रों के उच्चारण के साथ आहुतियाँ प्रदान कीं। आर्य समाज विज्ञान नगर के मंत्री राकेश चड्ढा ने बताया कि यह कार्यक्रम आज विशेष रूप से कार्तिक पूर्णिमा तथा गुरुनानक देव जी की जयन्ती पर आयोजित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज कोटा के जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा ने कहा कि जैसे सिख पंथ के प्रथम गुरु गुरुनानक देव जी महाराज के समय से ही संगत और पंगत में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता उसी प्रकार आर्य समाज में भी संगत और पंगत में कोई भेदभाव नहीं होता। ईश्वर की नजर में सब समान हैं। यज्ञ में मुख्य रूप से श्रीमती पूनम चड्ढा, विमला शर्मा, उषा छाबड़ा, अनीता शर्मा, पवन कौर, अलका मेहता, सुश्री साक्षी ने यजमान के रूप में आहुतियाँ अर्पित कीं। *(राकेश चड्ढा, मंत्री, आ.स.विज्ञान नगर)*

आर्यसमाज द्वारा स्कूली छात्र-छात्राओं को पाठ्य समाग्री वितरित

कोटा, १ नवम्बर। शिक्षा ही मनुष्य मात्र को मानव बनाती है तथा शिक्षा से ही

जीवन को सही दिशा मिलती है। उक्त विचार आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने रथकांकरा गाँव में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में छात्र छात्राओं को आर्य समाज की ओर से पाठ्य सामग्री वितरण के एक संक्षिप्त कार्यक्रम के आयोजन की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने बच्चों को नशे से दूर रहने तथा अपने माता-पिता को भी इस प्रवृत्ति से दूर रखने हेतु कोशिश करने की सलाह दी।

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की अध्यापिका श्रीमती रंजना नामा ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। *(अरविन्द पाण्डेय)*

सीतापुर-समाचार

डॉ.सुनील सारस्वत सम्मानित

'मानस चन्दन' त्रैमासिक पत्रिका के सम्पादक विद्यावाचस्पति डॉ.सुनील कुमार

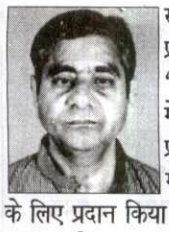

सारस्वत को उनकी साहित्य साधना तथा श्रेष्ठ कुल परम्परा के प्रति निष्ठा, भक्ति तथा श्रद्धा व आदरभाव के लिए 'साहित्यांचल' कोटद्वार, उत्तराखण्ड द्वारा साहित्यिक महोत्सव में 'चन्द्रज्योति सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्रति वर्ष 'साहित्यांचल' के संस्थापक संरक्षक डॉ.वेद प्रकाश माहेश्वरी की स्मृति में, साहित्यिक क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि तथा उत्तराखण्ड सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी ने डॉ.सारस्वत को अभिनन्दन पत्र, शाल, श्रीफल एवं ग्यारह हजार रुपये की नकद धनराशि प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में डॉ.सारस्वत की पत्नी श्रीमती ज्योति सारस्वत एवं पुत्र अंकुर सारस्वत का भी अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ.चन्द्र मोहन बड़थ्वाल तथा संचालन संस्था के महासचिव शिवप्रकाश कुकरेती ने किया तथा आभार कार्यक्रम के संयोजक राकेश अग्रवाल ने व्यक्त किया। *(राजेश यादव)*

पर्यावरण चेतना विषयक संगोष्ठी

गौरी बाल उद्यान विद्यालय तथा हिन्दी साहित्य परिषद् सीतापुर के संयुक्त तत्वावधान में पर्यावरण चेतना विषयक संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्या निर्मला पाल ने इस अवसर पर पर्यावरणीय चेतना से जुड़े हुए आठ साहित्य सेवियों को सम्मानित किया। सम्मानित साहित्यकारों के नाम इस प्रकार हैं- सर्वश्री गोपाल सागर, वैद्य भालेन्दुदत्त त्रिपाठी, महफूज़ रहमानी, अवधेश शुक्ल, प्रेम बिहारी लाल श्रीवास्तव, रामदास वैश्य एवं श्रीमती विनोदिनी रस्तोगी।

प्रधानाचार्या श्रीमती निर्मला पाल ने इस अवसर पर अपने वक्तव्य में कहा कि पर्यावरण में परिवर्तन चेतना के लिए सर्वाधिक आवश्यकता है- आत्म संयम की। श्री गोपाल सागर ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री श्याम किशोर 'बेचैन' ने पर्यावरणीय चित्रांकन प्रतियोगिता में विजयी छात्राओं को पुरस्कार एवं पदक प्रदान किये। सुश्री काजल को विशिष्ट छात्रा ट्राफी प्रदान की गई तथा संयोजिका सुश्री मीनाक्षी मेहरे को विशिष्ट सम्मान प्रदान किया गया। *(अवधेश शुक्ल)*

आर्य समाज मिश्रित का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज मिश्रित, जनपद सीतापुर का वार्षिक उत्सव २६ से २८ अक्टूबर २०१४ को समारोह पूर्वक श्री बाँकेलाल आर्य, प्रधान आर्य समाज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उत्सव में स्वामी विश्वानन्द सरस्वती (मथुरा), नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक (हरियाणा), रामनारायण शास्त्री (बिहार) के अतिरिक्त स्थानीय सीतापुर के स्वामी अमर मुनि जी, नेतराम आर्य, प्रेमचंद भजनोपदेशक के विचारों का जनता पर व्यापक प्रभाव पड़ा। अनेक युवक युवतियों ने दुर्व्यसनों के परित्याग का व्रत लिया। *(डॉ.एस.के.रस्तोगी)*

टण्डा-समाचार

आर्य समाज टाण्डा का वार्षिकोत्सव

पूर्वांचल की सर्वप्रमुख आर्य समाज टाण्डा, अम्बेडकरनगर का वार्षिकोत्सव २ से ६ नवम्बर २०१४ को भव्य समारोह के साथ आर्यनेता श्री आनन्द कुमार आर्य (पूर्व उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) की अध्यक्षता में बाबू मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज के परिसर में सम्पन्न हुआ। बृहद् वैदिक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य प्रातःकाल होता रहा जिसमें बड़ी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। यज्ञोपरान्त भजन, प्रवचन, अपराह्न विविध सम्मेलन आयोजित हुए तथा रात्रि में पुनः सम्मेलनों तथा व्याख्यानों के दौर चले। उत्सव में नगर की जनता ने ही नहीं, सम्पूर्ण जनपद एवं पार्श्ववर्ती जनपदों के आर्यजनों की उत्साहप्रद भागीदारी देखी गयी। प्रथम दिवस शोभा यात्रा की शोभा अभूतपूर्व थी जिसमें सभी वर्गों के लोग ओम् ध्वज की छाया में एकत्रित हुए। उत्सव को जिन आर्य विद्वानों ने अपने व्याख्यानों से सफलता प्रदान की, उनमें प्रख्यात विद्वान् डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, पं.दीनानाथ शास्त्री, आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी, श्री वीरानचन्द्र त्रिपाठी के नाम उल्लेखनीय हैं। ओजस्वी भजनोपदेशक सत्यप्रकाश आचार्य, श्री कैलाश कर्मठ आदि के गीतों ने अद्भुत समाँ बाँधा। समस्त कार्यक्रमों को आर्य कन्या इंटर कालेज एवं वैदिक एकेडेमी की प्रधानाचार्या, अध्यापक मण्डल एवं कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग मिलता रहा। *(सत्यप्रकाश आर्य)*

कानपुर-समाचार

आर्य समाज बर्रा

कानपुर की प्रख्यात आर्य समाज बर्रा का वार्षिक उत्सव ७ से ९ नवम्बर २०१४ को सोत्साह सम्पन्न हुआ। प्रातः काल एवं सायंकाल उभय सत्रों में यज्ञ, भजन, प्रवचन की ज्ञानगंगा की अजस्र धारा प्रवाहित होती रही। उत्सव में मुख्य रूप में स्वामी वीरेन्द्र परिव्राजक, पं.हरि शंकर अग्निहोत्री, सत्य प्रकाश आर्य एवं श्री रामप्रसाद जी ने अपने व्याख्यान एवं प्रवचन से जनता में वेदों का संदेश प्रसारित किया। समस्त कार्यक्रमों की अध्यक्षता लोकप्रिय चिकित्सक डॉ.जी.पी.सिंह ने की। उत्सव अपनी स्मृति की छाप छोड़ने में सफल रहा। *(रघुनाथ सिंह आर्य)*

सण्डीला-समाचार

डाक विभाग ध्यान दे

गत कई महीनों से यह शिकायत मिल रही है कि 'आर्य लोक वार्ता' का सण्डीला, जनपद हरदोई में डाक विभाग द्वारा वितरण नहीं किया जा रहा है, यह अत्यंत चिंताजनक है। सभी जानते हैं कि सण्डीला में 'आर्य लोक वार्ता' के सर्वाधिक स्वाध्यायशील पाठक हैं।

हम आशा करते हैं कि तत्काल सण्डीला के डाक विभाग के कर्मचारी गण त्रुटि को सुधार कर पत्र का वितरण प्रारंभ कर देंगे। -व्यवस्थापक

अपनी बात

श्रद्धांजलि! प्रो.उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिम बंगाल विशेषकर कोलकाता में आर्य समाज के सर्वोच्च प्रतिष्ठा प्राप्त वयोवृद्ध विद्वान्

पं.उमाकान्त उपाध्याय आज हमारे बीच नहीं हैं। कुछ दिन पूर्व (02.11.2014) उनके निधन का दुःखद समाचार मिला। ख्यातिलब्ध आर्य विद्वान् उमाकान्त उपाध्याय अगाध पाण्डित्य रखते हुए सौम्य, सरल और निरभिमानी थे। 'आर्य लोक वार्ता' के वे मार्गदर्शक थे। अनेक विषयों पर आवश्यकतानुसार हमारी सहायता करते थे। डॉ.भवानीलाल भारतीय के शब्दों में– "एक सात्विक, समर्पित, सुशिक्षित विद्वान् का आर्य बौद्धिक जगत से विदाई लेना एक महती तथा अपूरणीय क्षति है।"

व्यक्ति की सभी इच्छाएँ पूर्ण नहीं होतीं। उपाध्याय जी की भी एक इच्छा पूरी नहीं हो सकी! अपनी मृत्यु से कुछ दिन पहले उपाध्याय जी ने मुझसे यह जानना चाहा था कि "पं.गंगा प्रसाद उपाध्याय जी के प्रख्यात ग्रन्थ 'फिलॉस्फी ऑफ दयानन्द' का जो अनुवाद डॉ.रूपचन्द्र दीपक कर रहे हैं, वह अभी प्रकाशित हुआ कि नहीं?" मैंने उन्हें वांछित सूचना देने का वादा किया। फलतः दीपक जी के अभिन्न श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी (प्रधान, जिला सभा लखनऊ) से मैंने इस संबन्ध में जानकारी प्राप्त की और उन्हें सूचित किया कि 'अभी तो नहीं छपा है, शीघ्र ही ग्रंथ प्रकाशित होन वाला है।'

आज दिनांक 26.11.14 को जब मैं स्व.उपाध्याय जी के निधन और श्रद्धांजलि स्वरूप इन पंक्तियों को लिखने के लिए बैठा तो अकस्मात् कोरियर द्वारा उक्त ग्रंथ 'ऋषि दयानन्द का तत्व दर्शन' ग्रंथ मेरे पास आ गया। इसे ईश्वरेच्छा ही कहेंगे कि पं.उमाकान्त उपाध्याय की 'ऋषि दयानन्द का तत्व दर्शन' ग्रंथ देखने की इच्छा अधूरी ही रह गयी!

इतिहास पुरुष आचार्य पं.राजवीर शास्त्री

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित 'दयानन्द संदेश' अपनी स्पष्टता, दृढ़ता, निर्भीकता

एवं मौलिकता की दृष्टि से बेजोड़ है। 'दयानन्द संदेश' को इस प्रकार की ख्याति दिलाने का श्रेय स्व. शास्त्री जी को ही जाता है। विगत कुछ वर्षों का इतिहास अगर देखें तो राजवीर शास्त्री जैसा मौलिक विद्वान् कहीं नजर नहीं आता। विशेषकर विगत आधी सदी में अनेक आर्य विद्वानों ने अपनी प्रतिभा का उपयोग महर्षि दयानन्द की मान्यताओं के संशोधन में किया। सत्यार्थ प्रकाश में संशोधन; सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण को प्रकाशित करने की चेष्टा; महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित सृष्टि संवत् में परिवर्तन; संस्कार विधि की यज्ञ पद्धति में हस्तक्षेप जैसे प्रयासों की सप्रमाण रोकथाम का श्रेय आचार्य प्रवर राजवीर शास्त्री को जाता है। महर्षि दयानन्द की समस्त मान्यताओं की विजय हुई। आज महर्षि दयानन्द का सृष्टि संवत् ही सर्वत्र मान्य है। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि जैसे ऋषि प्रणीत ग्रन्थों की शुद्धता अक्षुण्ण है; दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह और दयानन्द वेदार्थ प्रकाश जैसे ग्रंथ सुलभ हैं; वैदिक संध्या और श्रीराम पर सुन्दर पुस्तकें मौजूद हैं। यह सब राजवीर शास्त्री की देन है। इतना ही नहीं, स्वामी करपात्री के नेतृत्व में 14 पौराणिक विद्वानों द्वारा महर्षि पर आक्षेप करने वाले ग्रंथ 'वेदार्थ पारिजात' का 'वेदार्थ कल्पद्रुम' के नाम से उत्तर देने वाले ग्रंथ का प्रकाशन भी राजवीर शास्त्री के प्रयासों का प्रतिफल है। 'वेदार्थ कल्पद्रुम' के द्वितीय भाग की भूमिका में राजवीर शास्त्री का पांडित्य देखते ही बनता है।

डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री के शब्दों में– 'यद्यपि पं.राजवीर शास्त्री अब हमार मध्य नहीं हैं– तथापि उन्होंने महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए निष्काम भाव से जो पुरुषार्थ व साहित्य साधना की है, उससे युग युगान्तरों तक वैदिक धर्म प्रेमी प्रेरणा ग्रहण कर लाभान्वित होते रहेंगे।' ('वैदिक पथ').

ऐसे अद्भुत प्रतिभासम्पन्न दिशादर्शक विद्वान् आचार्य राजवीर शास्त्री की स्मृति हमें अनन्त काल तक प्रेरणा देती रहेगी!

स्वर-सम्राट चौधरी वेगराज

नवम्बर, 1958। रोहतक कारागार की बैरक नं. 3। मेरे सन्निकट एक नवयुवक स्वर साधक

का आसन था जो अपनी नवविवाहिता पत्नी का सान्निध्य छोड़कर आर्य समाज के 'हिन्दी रक्षा सत्याग्रह' में भाग लेकर कारागार में आया था। निर्जीव व्यक्ति में भी प्राण और ऊर्जा का संचार कर देने वाला यह युवा गायक था– वेगराज बँसला, ग्राम–भूड़िया, पोस्ट–बझेड़ी कलाँ, जिला–मेरठ। जो उस समय गाया करता था–

उठती जवानी वाले, जग को जगा दे,
जाती हुई हिन्दी की लाज बचा दे!!

प्रथम परिचय के बाद जीवन पर्यन्त जब कोई भी आर्य समाज का सदस्य मुझसे उच्चस्तरीय आर्य भजनोपदेशक की जानकारी माँगता था, तो मैं चौ.वेगराज का नाम लेता था और उन्होंने कभी निराश नहीं किया। आमतौर पर भजनोपदेशक गण नगर कीर्तन में गाने से कतराते हैं किन्तु चौधरी वेगराज नगर कीर्तनों में भी सोत्साह भाग लेते थे। उनका स्वास्थ्य अति उत्तम था। ऊर्जा और उत्साह से वे भरपूर थे। नित्य व्यायाम करते थे। सदाचार उनका वैशिष्ट्य था।

स्वामी धर्मेश्वरानन्द (मंत्री, आ.प्र.सभा उ.प्र.) के शब्दों में– 'वे समाजसेवी संत की तरह जिये, वीर योद्धा की तरह लड़े, इतने लम्बे जीवने में साहित्यकार की तरह परिवार में रहकर भी परिवार से दूर ही रहे।'

पिछले पचास वर्षों में जो अनेक भजन मंडलियाँ बनीं, और जिन्होंने देश में जागृति उत्पन्न कीं; उनमें सबसे ऊँचा स्वर– वेगराज बँसला का था– इसमें कोई संदेह नहीं।

(डॉ. वेद प्रकाश आर्य)

thearyasamaj.org

सत्य, सत्यार्थ एवं सत्यार्थ प्रकाश की विजय

हरियाणा के शूरवीरों को प्रणाम! हरियाणा की धरती को नमन!

हरियाणा के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री श्री मनोहरलाल खट्टर अपनी पहली और कठिन परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। श्री खट्टर तथा हरियाणा के शूरवीरों का आर्य लोक वार्ता का प्रणाम! स्वामी दयानन्द की धवल यशः पताका आकाश मंडल में लहरा उठी, जब इक्कीसवीं सदी के सबसे बड़े पाखण्डी, दुरात्मा, छद्मवेशधारी तथाकथित संत रामपाल का बरनाला स्थित अभेद्य दुर्ग सुरक्षा बलों की एक सप्ताह की विकट घेराबंदी के बाद ढहा दिया गया और सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर रामपाल को गिरिफ्तार करने में सफलता हासिल की।

रामपाल की गिरिफ्तारी पर सरकार को कुल मिलाकर साढ़े छब्बीस करोड़ रुपया खर्च करना पड़ा। बताते चलें कि सत्यार्थ प्रकाश, दयानन्द और राम-कृष्ण के घोर निन्दक, अपने को कबीरपंथी कहने वाले और कबीर के विचारों की धज्जियाँ उड़ाने वाले रामपाल का आश्रम पहले करौंधा जिला रोहतक में था, जहाँ आर्य समाज के एक शान्तिपूर्ण प्रादेशिक सम्मेलन पर गोलियाँ चलाकर तीन व्यक्तियों की मृत्यु होने पर कांग्रेस की हूडा सरकार ने उसके आश्रम को बरवाला जिला हिसार में स्थानांतरित करा दिया था जहाँ चंद वर्षों में रामपाल भू.पू.सैनिकों की सेवाएँ लेकर अकूत धन खर्च कर अपनी अलग प्रदेश सरकार के समानान्तर शासन व्यवस्था तैयार कर ली थी।

लखनऊ-समाचार

भारतीय विद्या भवन में संस्थापक दिवस

भारतीय विद्या भवन, गोमतीनगर में संस्थापक दिवस (फाउण्डर्स डे) पर आयोजित भव्य समारोह में वैदिक विद्वान् डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता ने मुख्य वक्ता के रूप में विचार व्यक्त करते हुए कहा- "विद्यालय के संस्थापक स्व.आर.के.गुप्त एक श्रेष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ही नहीं, अध्यात्मवेत्ता भी थे। गीता पर उन्होंने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ लिखा। विद्यालय में भी वे आध्यात्मिक मूल्यों के समावेश का ध्यान रखते थे। जहाँ भारतीय विद्या भवन को श्री आर.के.गुप्त जैसा कार्यकुशल, प्रबंधवेत्ता प्रारंभ से ही मिला; उसी तरह अत्यन्त प्रतिष्ठित त्यागी-परिवार की सुयोग्य कार्यकुशल प्रधानाचार्या श्रीमती मालती त्यागी की सेवाएँ भी सुलभ हुईं, जिन्होंने अपनी निष्ठा, सद्व्यवहार एवं प्रबंध पटुता से विद्यालय को सुदृढ़ आधारशिला प्रदान की।"

संस्थापक दिवस के अवसर पर ३०.१०.१४ को विनीत खण्ड-६, गोमती नगर स्थित विद्यालय के सभागार में आयोजित समारोह में अन्तर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं के विजेता छात्रों को पुरस्कार वितरित किये गये तथा संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विशेष रूप से सुश्री पद्मा गिडवानी एवं अंजली नारायण के गायन ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्रीमती पूर्णिमा श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का संचालन किया। समारोह के विशिष्ट अतिथियों में श्री पंकज गुप्त, श्री बागची, ब्रिगेडियर आर.एन.मिश्र, डॉ.नूतन गुप्त आदि ने अपने वक्तव्य में संस्थापक श्री आर.के.गुप्त के महान् गुणों और कार्यों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर संस्थापक के व्यक्तित्व पर आधारित वृत्तचित्र प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम के अंत में सामूहिक भोज की व्यवस्था की गई। प्रधानाचार्या श्रीमती मालती त्यागी ने आभार प्रदर्शन किया तथा सभी से विद्यालय को सहयोग प्रदान करने की अपील की।

आर्य समाज एल.डी.ए.मानसरोवर का वार्षिकोत्सव

लखनऊ के दक्षिणांचल में कानपुर रोड पर स्थित आर्य समाज एल.डी.ए. मानसरोवर का वार्षिक समारोह दिनांक ०२.११.१४ रविवार को सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल यज्ञ तत्पश्चात् भजनोपदेश एवं आमंत्रित विद्वानों के वेदोपदेश होते रहे, जिसका आर्य जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। बड़ी संख्या में उपस्थित होकर जनता ने कार्यक्रमों से लाभ उठाया। समस्त कार्यक्रम वैदिक विद्वान् श्री पं.नरदेव आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। अंत में ऋषिलंगर (प्रीतिभोज) की व्यवस्था आर्य समाज द्वारा की गई। उत्सव में आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के पदाधिकारी गण उपस्थित थे। *(श्रीमती कुशल सहगल)*

आर्य समाज तेलीबाग, उतरेठिया का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज तेलीबाग, उतरेठिया का १०वाँ वार्षिकोत्सव १३ से १६ नवम्बर तक धूमधाम के साथ बलदेव विहार पार्क में मनाया गया। उत्सव में जिन विद्वानों को विशेष रूप में आमंत्रित किया गया- उनमें डॉ.गंगाशरण आर्य, दिल्ली; आचार्य रामप्रसाद आर्य, कानपुर; आचार्य सन्तोष वेदालंकार, लखनऊ; सुश्री सुदेश आर्या, दिल्ली एवं वेदविदुषी डॉ.श्रीमती निष्ठा वेदालंकार के नाम प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त श्री रमेश चन्द्र आर्य, सत्य प्रकाश आर्य, नवनीत निगम, प्रत्यूषरत्न पाण्डे मंत्री जिलासभा, एवं रमेशचन्द्र त्रिपाठी प्रधान जिला सभा ने भी सभा को सम्बोधित किया। प्रतिदिन कार्यक्रम का संचालन श्री भरतसिंह आर्य एवं रमेशचन्द्र आर्य मंत्री आर्य समाज ने किया। डॉ.आर.डी.आर्य, प्रधान आर्य समाज एवं श्री विल्लेश्वर शास्त्री कोषाध्यक्ष ने समारोह को सफल बनाने हेतु धन्यवाद ज्ञापन किया। ऋषि लंगर के आयोजन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

श्रीमती लोकेश की पुण्य स्मृति

२७.१०.१४। पतंजलि योग समिति (पूर्व) के साहित्य प्रभारी श्री मदन गोपाल सिंघल की सहधर्मिणी स्वर्गीया श्रीमती लोकेश सिंघल की स्मृति दिवस जनपद के ग्रामीण क्षेत्र प्राथमिक विद्यालय, महमूदपुर में यज्ञ, हवन, भजन-सत्संग, प्रवचन, योग शिक्षा तथा बच्चों में स्वल्पाहार वितरण के साथ मनाया गया। प्राथमिक विद्यालय की समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ तथा छात्र-छात्राएँ विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हुईं। शिक्षकों में श्री संतशरण तथा शिक्षिकाओं में श्रीमती यादव का सराहनीय योगदान रहा। इसके अलावा कार्यक्रम के संयोजन-संचालन में श्रीमती विकास सिंघल, श्री विकास सिंघल, अमित सिंघल की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही। श्री मदन गोपाल सिंघल ने योग की कतिपय क्रियाओं, प्राणायाम विधि से बच्चों को परिचित कराया तथा श्रीमती विकास ने बच्चों को गीत गायन, स्वच्छता एवं व्यवहार की शिक्षा दी, जिसका सर्वसाधारण पर विशेष प्रभाव पड़ा। यज्ञ का संचालन डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता ने किया।

'गामिनी' काव्य का विमोचन

प्रेमचंद सभागार, हिन्दी संस्थान में दिनांक २६.१०.१४ को जाने माने कवि और काव्यमंचों के संचालक श्री श्रीश रत्न पाण्डेय की काव्यकृति 'गामिनी' का विमोचन का. शिवगोपाल मिश्र, महामंत्री एआईआरएफ द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता के रूप में आमंत्रित डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने 'गामिनी' कथा काव्य की काव्यगत विशेषताओं पर सविस्तार प्रकाश डाला। आपने कहा- 'गामिनी काव्य आधुनिक युगबोध का काव्य है और यह श्रमिक जीवन की यथार्थता का रेखांकन करने में समर्थ है। अपने प्रकाशन के पूर्व से ही 'गामिनी' की अनेक रचनाएँ सहृदयों की जुबान पर हैं- इससे काव्य की गरिमा का परिचय मिल जाता है।

इस अवसर पर डॉ.मिर्जा हसन नासिर, डॉ.कैलाश निगम, अमृत खरे, वाहिद अली वाहिद, कृष्णानन्द राय, गोबर गणेश, आभारानी मिश्र, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', दयानन्द जड़िया इत्यादि कवियों ने अपने सरस काव्यपाठ से आयोजन को सौष्ठव प्रदान किया। श्री रमनलाल अग्रवाल 'रम्मन' का लिखित काव्यात्मक संदेश पढ़कर सुनाया गया। वरिष्ठ कवयित्री श्रीमती रमा आर्य 'रमा' ने काव्यपाठ के साथ ही मार्मिक वक्तव्य भी दिया; जिसकी सभी ने सराहना की। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साहित्यप्रेमी मौजूद थे।

समारोह की अध्यक्षता श्री वी.एस. पाण्डेय ने की तथा संचालन श्री प्रत्यूष रत्न पाण्डेय ने किया।

वैवाहिक रजत जयन्ती

२३.११.१४। आर्य समाज राजाजीपुरम के प्रधान डॉ.आनन्द वर्णवाल के कनिष्ठ पुत्र श्री शैलेन्द्र एवं पुत्रवधू श्रीमती नीलिमेशमा की २५वीं वैवाहिक जयन्ती के उपलक्ष्य में यज्ञ एवं समारोह आर्य समाज मंदिर में सम्पन्न हुआ। यज्ञ आचार्य वेदव्रत अवस्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ प्रक्रिया के सम्पादन में कु.प्रतिज्ञा शास्त्री एवं श्री निरंजन सिंह का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। श्री निरंजन सिंह ने कार्यक्रम का विधिवत संचालन किया तथा कु.प्रतिज्ञा ने सुन्दर भजन सुनाकर सभी को आह्लादित किया। इस सुअवसर पर विशेष अतिथि डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने एक आदर्श पुत्र और पुत्रवधू के कर्तव्यों पर प्रकाश डाला। डॉ. आनन्द वर्णवाल एवं शैलेन्द्र ने अतिथि विद्वानों को सम्मानित किया तथा सभी के प्रति आभार प्रदर्शित किया।

आर्य गौरव कर्नल पाल प्रमोद का अभिनन्दन

२०.११.१४। आर्य समाज गंगानगर, मेरठ के प्रधान एवं जनप्रिय समाजसेवी कर्नल पाल प्रमोद का उनके लखनऊ आगमन के अवसर पर योगाश्रम, अलीगंज में वैदिक सत्संग के तत्वावधान में हार्दिक अभिनन्दन किया गया।

सायं ५ बजे से प्रारम्भ कार्यक्रम में संध्योपासना एवं यज्ञ सम्पन्न हुआ। प्रमोद जी ने सद्यः प्रकाशित यज्ञ संबन्धी पुस्तक का विमोचन किया तथा 'ओम की झंकार' शीर्षक भावनापूर्ण भजन भी प्रस्तुत किया। श्री प्रेमशंकर शुक्ल, प्रधान आर्यसमाज डालीगंज ने भी इस अवसर पर एक गीत सुनाया तथा श्री प्रमोद जी के अग्रज श्री पाल प्रवीण ने एक उत्साहवर्द्धक गीत सुनाया तथा प्रमोद जी के व्यक्तित्व की विशेषताओं से अवगत कराया। डॉ. वेद प्रकाश आर्य ने कर्नल पाल प्रमोद की कर्तव्यपरायणता कार्यकुशता एवं वैदिक निष्ठा से संबन्धित कई संस्मरण प्रस्तुत किये।

समारोह में श्री नागपाल, श्री द्विवेदी जी, शिवशंकर लाल वैश्य, श्री सेवक राम, श्रीमती आदर्श गुप्त के अतिरिक्त कमलेश, श्रीमती गीतांजलि, श्री अभिषेक इत्यादि प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया।

चन्द्रकला-जयन्ती

कई व्यक्ति ऐसे होते हैं कि वे दुनिया से जाकर भी नहीं जाते, हमारे आसपास ही मौजूद रहते हैं। स्व. चन्द्रकला त्रिपाठी (धर्मपत्नी श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी) का व्यक्तित्व भी ऐसा ही था। चन्द्रकला जी का ७७वाँ जन्म दिवस दि. १६.११.१४ को 'देवाशीष', जनरैलगंज, हरदोई रोड में यज्ञ के आयोजन के साथ मनाया गया। समस्त पारिवारिक जनों ने यज्ञ में आहुति देकर चन्द्रकला जी का पुण्य स्मरण किया।

मलयज का जन्मदिवस

२४.११.१४। १६/८३८, इन्दिरानगर में चि.मलयज त्रिपाठी (सुपुत्र श्री अमित वीर त्रिपाठी एवं श्रीमती रश्मि त्रिपाठी) का जन्मदिवस वैदिक विधान से मनाया गया। श्री पाल प्रवीण जी ने चलभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया। श्री धीरेन्द्र शंकर वाजपेयी, निमिषा वाजपेयी एवं सुश्री सुमन पाण्डेय ने अपनी शुभकामनाएँ प्रदान कीं।इस अवसर पर मलयज के बहुत से सहपाठी मित्र आयुष, अर्णव आदि उपस्थित थे जिन्होंने गीत-संगीत के साथ यज्ञ में भी श्रद्धापूर्वक भाग लिया।

आपदा-कोष में दान

- आर्य समाज शृंगारनगर के प्रधान डॉ.रूपचन्द्र दीपक सूचित करते हैं कि जम्मू कश्मीर में आई बाढ़ विभीषिका के संदर्भ में आर्य समाज शृंगारनगर द्वारा ११०००/-रुपये 'आपदा कोष' में भेजे गये।
- डॉ.शान्तिदेव बाला के संरक्षण में महिला शक्ति मण्डल लखनऊ द्वारा ५०००/- जम्मू कश्मीर आपदा कोष में भेजे गये।

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-२, हिमांशु सदन, ५-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' ५३९क/२३४ हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
'वेदाधिष्ठान' 539क/234, हरीनगर, पो0-इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

E-mail-
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
व्रती सदस्य	–	250 रु. वार्षिक
ऋत्विक् सदस्य	–	1,200 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	2,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	12,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि 'बैंक ऑफ बड़ौदा' की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651
खाते का प्रकार-बचत खाता
बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV

प्रतिष्ठापक
श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार

संरक्षक
श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, राजस्थान
श्रीमती प्रमोद कुमारी, लखनऊ
श्रीमती शालिनी कुमार, लखनऊ
श्री कौशल किशोर श्रीवास्तव, लखनऊ
श्री जगदीश लाल खत्री, लखनऊ
श्रीमती कुसुम वर्मा, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री रघुनाथ सिंह आर्य, कानपुर
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई
शिवशंकर लाल वैश्य, सीतापुर

प्रमुख सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ
श्री अखिल मित्र शास्त्री, लखनऊ

आवश्यक सूचना

कृपया शिविर कार्यालय के पते का उपयोग करें-
डॉ. वेद प्रकाश आर्य,
प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता
19/838, प्रथम तल, रिंगरोड,
इन्दिरा नगर, लखनऊ-226 016